



आइए **गर्व** के साथ मतदान करें

मनाएं लोकतंत्र का सबसे बड़ा **उत्सव**

ईश्वर में हमारा विश्वास



सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय नवीन मेल



कुछ दिनों में कांग्रेस विलुप्त

व सपा हो जाएगी समाप्त



संसेक्स

74,005.94 ↑ +342.22



डॉलर

83.302 ↓ -0.175



रांची सराफा

गाम 73,500

किलो 96,500



आज के नैच



समय : 7:30 बजे से



स्थान : गुवाहाटी

समय : 7:30 बजे से

स्थान : गुवाहाटी

एक नजर

अवैध खनन के दौरान चाल धंसने से दो महिलाओं की मौत

गिरिडीह। जिले के गावां थाना क्षेत्र के परसोनी में अवैध माइका खनन के दौरान चाल धंसने से दो महिलाओं की मौत हो गई जबकि एक महिला घायल हो गई। मृतकों की पहचान बिहार के गोवंदपुर थाना क्षेत्र निवासी फुलवा देवी और गावां थाना क्षेत्र के बिरने निवासी दुनी देवी के रूप में हुई है। घायल महिला परसोनी निवासी गीता देवी है। माइका तस्करों ने मामले को बिरने का भरपूर प्रयास किया लेकिन पुलिस के संदेह के कारण मामला सामने आ गया। बताया गया कि शुक्रवार की रात दोनों मृत महिलाओं के शव को माइका तस्कर बाइक से लेकर भाग रहे थे। इसी बीच पुलिस गश्ती वाहन की नजर उन पर पड़ी। बाइक पर सवार लोग पुलिस को देखते ही इधर-उधर भागने लगे। जब पुलिस को शक हुआ तो उन्होंने बाइक सवार युवकों का पीछा किया। पीछा करने पर वे दोनों शवों को बाइक के साथ छोड़कर भाग निकले। इसके बाद पुलिस ने बिरने गांव के पास से दोनों महिलाओं के शवों और बाइक को बरामद कर लिया।

आज कल



इंडिया



सुनील बादल

नेहरू ने खुद बटन नहीं दबाया और नई परंपरा की शुरुआत करते हुए बांध बनाने वाली मजदूर बुधनी से उद्घाटन कराया

आलमगीर आलम के मनी लांड्रिंग के अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन की हो जांच

बांग्लादेश में कई कंपनियों के मालिक हैं आलमगीर के भाई

ब्यूरो रिपोर्ट

रांची। झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास विभाग में जारी टेंडर कमीशन घोटाले में गिरफ्तार पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम के मनी लांड्रिंग से जुड़े अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन की जांच की मांग भाजपा ने की है। मालूम हो कि फिलहाल आलमगीर आलम ईडी के रिमांड पर हैं। भाजपा प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने शनिवार को कहा कि पूर्व मंत्री आलमगीर आलम के एक भाई



जहांगीर आलम बांग्लादेश के नागरिक हैं और वहां के अरबपति व्यवसायी हैं। वहां लंबे समय से बांग्लादेश में रह रहे हैं। इस दौरान

उन्होंने वहां करोड़ों-अरबों की चल-अचल संपत्ति बनाई है, उनके व्यवसाय में आलमगीर आलम की अवैध कमाई लगे होने की

पीएस संजीव और सहायक जहांगीर तीन दिन के ईडी रिमांड पर

रांची। पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम के पीएस संजीव लाल और उसके नौकर जहांगीर आलम को रिमांड अवधि समाप्त होने पर शनिवार को रांची स्थित ईडी कोर्ट में पेश किया गया। ईडी ने पूछताछ की आवश्यकता बताते हुए फिर से तीन दिनों की रिमांड मांगी। इस पर ईडी के विशेष न्यायाधीश राजीव रंजन की अदालत ने तीन दिनों की रिमांड की मंजूरी दे दी। ईडी ने संजीव और जहांगीर को छह मई को गिरफ्तार किया था। ईडी की छपेमारी में संजीव लाल के नौकर जहांगीर आलम सहित अन्य के ठिकानों से 35.23 करोड़ रुपये बरामद हुए थे।

आशंका है। प्रतुल शाहदेव ने बताया कि 90 के दशक में आलमगीर आलम का राजनीतिक उदय हुआ और इसी दौरान उनके

भाई जहांगीर आलम बांग्लादेश शिफ्ट हो गए। उनके खाक से शीर्ष तक पहुंचाने की कहानी की गहन जांच होनी चाहिए। प्रतुल ने दावा

किया कि जैसे-जैसे आलमगीर आलम का कद बढ़ता गया, वैसे-वैसे उनके भाई का बांग्लादेश में वित्तीय साम्राज्य भी बढ़ता गया।

थमा चुनाव प्रचार का शोर

तीन सीटों पर मतदान कल

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झारखंड में लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण और देश के पांचवें चरण का प्रचार शनिवार की शाम समाप्त हो गया। रविवार को प्रत्याशी और उनके समर्थक डोर टू डोर जनसंपर्क कर सकते हैं। झारखंड की तीन लोकसभा सीटों पर 20 मई सोमवार को मतदान होगा। इनमें कोडरमा, चतरा और हजारीबाग शामिल हैं। मतदान सुबह सात बजे से शाम पांच बजे तक चलेगा। इन तीन सीटों पर कुल 54 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं। इनमें दो महिलाओं के साथ 23 निर्दलीय उम्मीदवार शामिल हैं। इन तीनों सीटों पर पिछले लोकसभा चुनाव में 64-66 प्रतिशत मतदान हुआ था। तीनों सीटों पर पुरुषों से अधिक महिलाओं ने मताधिकार का प्रयोग किया था। इन सीटों पर 2019 के चुनाव में भाजपा की आंधी चली थी। हजारीबाग में इसके उम्मीदवार जयंत सिन्हा ने 4 लाख 79 हजार 548, कोडरमा में अन्नपूर्णा देवी ने 4 लाख 55 हजार 600 और चतरा में सुनील सिंह ने 3 लाख 77 हजार 871 मतों के भारी अंतर से जीत दर्ज की थी। इस बार इन सीटों पर एनडीए के लिए जहां 2019 की बेमिसाल जीत का रिकॉर्ड दोहराने का चैलेंज है, वहीं विपक्ष के सामने सवाल ये है कि वह यहां अपने पांव जमा पाता है या नहीं? भाजपा ने तीन में से दो सीटों हजारीबाग और चतरा में पिछली बार रिकॉर्ड अंतर से जीत दर्ज करने वाले सांसदों जयंत सिन्हा एवं सुनील सिंह का टिकट इस बार काट दिया है।

भाजपा ने हजारीबाग और चतरा से उतारे हैं नए चेहरे, कोडरमा में प्रत्याशी दोहराया



हजारीबाग सीट से 17 उम्मीदवार चुनावी मैदान में हैं। यहां पर भाजपा के मनीष जायसवाल और कांग्रेस के जेपी पटेल आमने-सामने हैं। दोनों मूलवासी हैं। जहां मनीष जायसवाल का परिवार लंबे समय से हजारीबाग की राजनीति में सक्रिय है वहीं जेपी पटेल के पिता झामुमो के दिग्गज नेता व कई बार सांसद व विधायक रहे थे।

2019

में चला था 'भाजपा का तूफान', इन तीनों सीटों को बचाने की बड़ी चुनौती



कोडरमा से 15 उम्मीदवार किस्मत आजमा रहे हैं। इस सीट से भाजपा की अन्नपूर्णा देवी और सीपीआई एमएल के विनोद सिंह आमने-सामने हैं। पिछली बार अन्नपूर्णा देवी ने यहां झारखंड विकास मोर्चा के सुप्रीमो बाबूलाल मरांडी को हराया था। अब बाबूलाल मरांडी भाजपा में हैं और वह अन्नपूर्णा देवी के लिए वोट मांग रहे हैं।

इंडी गठबंधन से तीनों सीटों पर नए चेहरे कोडरमा में सीपीआई एमएल के विनोद सिंह



चतरा लोकसभा सीट पर सबसे अधिक 22 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं। यहां पर कांग्रेस के केएन त्रिपाठी और भाजपा से कालीचरण सिंह आमने-सामने हैं। केएन त्रिपाठी डालटनगंज के पूर्व विधायक हैं। वह भी खुद को चतरा संसदीय क्षेत्र का असली मूलवासी बताते हैं जबकि कालीचरण चतरा के मूल निवासी हैं।

सरकार बनी तो जीएसटी का सरलीकरण : राहुल

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को दिल्ली में एक जनसभा की। इस दौरान राहुल गांधी ने दिल्ली में 'आप' और कांग्रेस गठबंधन के लिए वोट मांगते हुए कहा कि हाथ के निशान में झाड़ू है। राहुल गांधी ने कहा कि उनकी सरकार आने पर वह सबसे पहले अग्निवीर योजना बंद करेगी। जीएसटी का सरलीकरण किया जाएगा। जीएसटी में पांच अलग-अलग प्रकार के टैक्स नहीं होंगे, केवल एक टैक्स होगा और वह भी कम से कम टैक्स होगा। चांदनी चौक और देश के छोटे व्यापारियों

को बैंक लोन देंगे। उन्होंने कहा कि मेड इन चाइना का मुकाबला मेड इन चांदनी चौक करेगा। यह जनसभा चांदनी चौक संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आयोजित की गई थी। इस दौरान दिल्ली से चुनाव लड़ रहे कांग्रेस के तीनों प्रत्याशी चांदनी चौक से जयप्रकाश अग्रवाल, उत्तर पूर्वी दिल्ली से कन्हैया कुमार और उत्तर-पश्चिमी दिल्ली से उम्मीदवार उदित राज मौजूद रहे। जनता से वोट की अपील करते हुए कहा कि दिल्ली की 7 सीटों में से तीन सीटों पर हाथ के निशान को वोट दीजिए और बाकी की चार सीटों पर झाड़ू के निशान पर वोट डालिए।

एजेंसी

नई दिल्ली। नई दिल्ली में शनिवार को जनसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस व आप पर जमकर निशाना साधा। कहा, केंद्र सरकार जहां दिल्ली के हर गरीब और मध्यम वर्ग के व्यक्ति के जीवन को आसान बनाने का प्रयास कर रही है वहीं दूसरी तरफ इंडी गठबंधन दिल्ली को तबाह करने में जुटा है। ये लोग लगातार राजनीति का पतन करने के लिए और करोड़ों देशवासियों का भरोसा तोड़ने के लिए जिम्मेदार हैं। कहा, ये लोग दिल्ली को लूटने का कोई मौका नहीं छोड़ते। ये भ्रष्टाचार मिटाने के



नाम पर आए थे और अब हजारों करोड़ के घोटाले में जेल के चक्कर लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तो अब पूरी तरह से एक्सपोज हो गई है। पहले कांग्रेस वाले शराब घोटाले को लेकर तूफान मचाए रहते थे, फिर शाही

परिवार के कहने पर कांग्रेस ने भ्रष्टाचारियों को गले लगा लिया, जिसकी वजह से कांग्रेस के स्थानीय नेताओं को भी समझ नहीं आ रहा कि करें तो क्या करें? पीएम मोदी ने कांग्रेस और आप के गठबंधन पर कटाक्ष करते हुए कहा

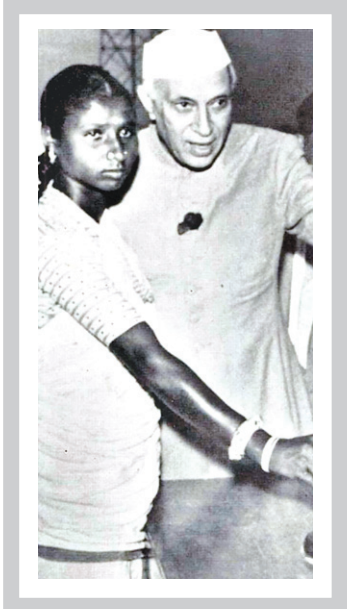
2024 का चुनाव गरीब और मध्यम वर्ग के जीवन को आसान बनाने, उनके जीवन में सुधार लाने, भारत के युवाओं के लिए नए अवसर बनाने और मजबूत भारत बनाने का चुनाव है।

कि दिल्ली और हरियाणा में दोस्ती और पंजाब में कुश्ती, यह दोग कब तक चलेगा? दुनिया देख रही है कि कैसे एक भ्रष्टाचारी दूसरे भ्रष्टाचारी को कवर दे रहा है। उन्होंने गांधी परिवार पर निशाना साधते हुए कहा कि एक जमाना

था, जब कांग्रेस पूरे देश पर राज करती थी। कांग्रेस की 4 पीढ़ियों ने दिल्ली पर राज किया, लेकिन आज इनमें दिल्ली की 4 सीट पर लड़ने की ताकत नहीं रही। लेकिन फिर भी कांग्रेस का घमंड नहीं टूटा है। उन्होंने विकसित भारत के लिए अपने संकल्पों को लोगों के सामने रखते हुए कहा कि देश में एक मजबूत सरकार की जरूरत है और इसके लिए उन्हें मजबूत साथियों की जरूरत है, इसलिए दिल्ली के लोगों को हर बूथ में कमल खिलाकर भाजपा के सभी सातों उम्मीदवारों को विजयी बनाना होगा।

अनजाने में नेहरू ने आदिवासी लड़की का जीवन नर्क बना दिया था

पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को कुछ लोग बड़े विद्वान और विश्व स्तर का लेखक बताते थे क्योंकि समृद्ध परिवार से आनेवाले नेहरू ने विदेशों में पढ़ाई की थी और विदेशी संस्कृति का बहुत ज्ञान था। पर सनातन भारत की प्राचीन मान्य गंधर्व विवाह परंपरा जिसे आदिवासी समुदाय भी मानता था की जानकारी न होने से उन्होंने एक युवा आदिवासी महिला बुधनी मंझिआईन का जीवन नर्क बना दिया था। आजादी के बाद झारखंड के पंचेत (धनबाद) में बने पंचेत बांध के उद्घाटन के लिए 6 दिसंबर, 1959 को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के स्वागत के लिए दामोदर वैली कॉरपोरेशन (डीवीसी) ने 15 साल की एक आदिवासी लड़की बुधनी मंझिआईन का चयन किया था। बुधनी के साथ इस काम के लिए मंच पर थे रावण मंझी। इन दोनों ने पंचेत बांध के निर्माण में मजदूरी की थी। नेहरू आए, स्वागत हुआ और अब बांध के उद्घाटन की बारी थी। एक बटन दबाकर ये काम पूरा होना था लेकिन नेहरू ने खुद बटन नहीं दबाया और एक नई परंपरा की शुरुआत करते हुए बांध बनाने वाली मजदूर बुधनी से उद्घाटन कराया। उद्घाटन के बाद उसी रात से बुधनी



की जिंदगी दूषर हो गई। खोरबोना गांव में संथाली समाज की बैठक हुई। समाज के लोगों ने पाया कि बुधनी मंझिआईन ने गैर-आदिवासी विरादरी से आने वाले नेहरू को माला पहनाई थी और नेहरू ने उन्हें माला पहनाई बैठक में तय हुआ कि माला पहनाने

का मतलब है कि बुधनी का विवाह हो गया गैर-आदिवासी से विवाह के कारण समाज ने बुधनी के बहिष्कार का फैसला ले लिया, उसे जाति से निकाल दिया लोगों ने बुधनी से मेलजोल खत्म कर दिया। 80 साल की उम्र में 21 नवंबर को बुधनी मंझिआईन ने आखिरी सांस ली। 12016 में बीबीसी से जुड़े पत्रकार रवि प्रकाश ने बुधनी से बात की थी पत्रकारों को बताया था, बुधनी बड़ी तेज-तर्रार महिला थी और यह 1959 वाली घटना के बाद नहीं हुआ। वे बचपन से ही ऐसी थीं, यही वजह रही कि उन्हें प्रधानमंत्री के स्वागत की जिम्मेदारी दी गई थी। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि सारी बातें अंग्रेजी मीडिया की देन है जिसने बुधनी को नेहरू की पहली आदिवासी पत्नी तब बताया था। जो भी हो आज बुधनी के नाम से गांव को जाना जाता है। 1959 में जो हुआ था वो धारणा बुधनी की जिंदगी के आखिरी सालों में पूरी तरह बदल चुकी था। समाज से बहिष्कार के बाद बुधनी के लिए सबसे बड़ी मुसीबत तब आन पड़ी जब 1962 में डीवीसी ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया। इसी दौरान उनकी मुलाकात सुधीर दत्त नाम के एक मजदूर से हुई जिन्होंने आश्रय दिया समाज के डर से

सुधीर और बुधनी ने विवाह तो नहीं किया लेकिन दोनों साथ ही रहने लगे। दोनों को एक बेटी हुई। अपनी जिंदगी के आखिरी दिनों में बेटी रत्ना के साथ ही बुधनी पंचेत में रहती थीं। जवाहरलाल नेहरू के पोते राजीव गांधी 1984 में देश के प्रधानमंत्री बने और राजीव अपने दादा नेहरू के बारे में रिसर्च कराया इसी दौरान उन्हें पंचेत की घटना का पता चला। 1985 में उन्होंने भिलाई में बुधनी से मुलाकात की। इस मुलाकात के बाद डीवीसी में ही बेटी के साथ उन्होंने पूरी जिंदगी गुजार दी। लेकिन अपने साथ दो कसक लेकर चली गई - एक घर न मिलने की और बेटी की नौकरी लगने की। बुधनी को दोबारा नौकरी दिलाई थी राजीव गांधी ने। बुधनी को घर और बेटी की नौकरी को उम्मीद थी राजीव के बेटे राहुल गांधी से। जो उनके जिंदा रहते तो पूरी नहीं हो पाई। अक्सर बड़े लोग जनजातीय या भारतीय समाज के रीति रिवाज से जुड़े कपड़े पहनकर या साथ खड़े होकर फोटो खिंचवा लेते हैं पर उनकी मुलाकात सुधीर दत्त नाम के एक मजदूर से एक सीख है।

स्वाति मालीवाल मामले में बिभव कुमार गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

नई दिल्ली। स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट के मामले में दिल्ली पुलिस ने बिभव कुमार को गिरफ्तार कर लिया है। सिविल लाइन थाने में बिभव कुमार से पूछताछ की जा रही है। सिविल लाइन पुलिस ने बिभव कुमार को पहले हिरासत में लिया था, उसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। थाने के बाहर पहुंचे बिभव कुमार के वकीलों को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं मिली। गिरफ्तारी से पहले बिभव कुमार ने दिल्ली पुलिस को दो मेल किए थे। पहले मेल में उन्होंने स्वाति मालीवाल की शिकायत की थी और दूसरे मेल में उन्होंने दिल्ली पुलिस की जांच में सहयोग करने की बात की थी। जमानत याचिका खारिज: स्वाति मालीवाल से मारपीट के मामले में गिरफ्तार किए गए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पीएस बिभव कुमार की अग्रिम



अग्रिम जमानत याचिका की अर्जी तीस हजारी कोर्ट से खारिज

जमानत याचिका को कोर्ट ने खारिज कर दिया है। बिभव कुमार ने अग्रिम जमानत याचिका की अर्जी तीस हजारी कोर्ट में लगाई थी। जमानत याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा कि एडिशनल पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने कोर्ट को बताया कि बिभव को 4 बजकर 15 मिनट पर गिरफ्तार कर लिया गया है।

एक नजर

श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर मंदिर में आज मनेगा मोहिनी एकादशी का व्रत
रांची। श्रीलक्ष्मी वेंकटेश्वर (तिरुपति बालाजी) मंदिर में वैशाख शुक्ल पक्ष की मोहिनी एकादशी का व्रत रविवार (19 मई) को मनाया जाएगा। बताया गया कि यह मोहिनी एकादशी समस्त पापों का क्षय तथा सब प्रकार के दुःखों का निवारण कर देता है।

मोहिनी एकादशी पर गायत्री परिवार करेगा जप और अनुष्ठान का आयोजन
रांची। मोहिनी एकादशी व्रत-उपवास दिवस पर आध्यात्मिक पूजा-पाठ जप-अनुष्ठान करने का संकल्प गायत्री परिवार ने लिया है। यह अखंड जप रविवार (19 मई) के तड़के 4 बजे से सोमवार (20 मई) के तड़के 4 बजे तक चलेगा। समूह संचालन प्रतिनिधि ने यह जानकारी दी।
खूंटो के वृद्धाश्रम में चिकित्सा और विधिक जागरूकता शिविर

खूंटो। ओल्ड एज होम खूंटो में शनिवार को बुजुर्गों के लिए छह दिवसीय कैपेन के तहत डीएलएसए के जरिए स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर सह विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। सदर अस्पताल के डॉक्टरों और नर्सों की टीम ने ओल्ड एज होम के 26 वृद्धों के स्वास्थ्य की जांच की और उन्हें दवा के साथ ही चिकित्सीय परामर्श दिये। डीएलएसए की सचिव राजश्री अपर्णा कुजूर के मुताबिक, वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों के बीच फलों और मिठाइयों का भी वितरण किया गया। उनके खान-पान एवं रहन-सहन के बारे में जानकारीयां भी दी गई। साथ ही नि-शुल्क कानूनी सहायता के बारे में लोगों को बताया गया। कार्यक्रम में चार डॉक्टर और दो नर्सों ने अपनी सेवा दी। इस मौके पर डीएलएसए की पीएलवी अंजू कच्छप, नेली कोनगाड़ी, ओल्ड एज होम के अधीक्षक अश्विनी कुमार के अलावा अन्य सदस्य उपस्थित थे।
रांची से 35 बोरा डोडा के साथ पांच नशा कारोबारी गिरफ्तार
रांची। सुखदेवनगर थाना पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान पांच नशा कारोबारियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार नशा कारोबारियों में अंजुल मिंज, सुधीर कुमार, राजु भगत, तैकिर आलम, राजा कुमार शामिल है। इनके पास से एक लाल रंग का बोलैनो कार, एक सफेद रंग का बोलैरो पिकअप, 35 बोरा डोडा, छह मोबाईल फोन और 34 हजार नकद रुपये बरामद किये गये है। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने शनिवार को बताया कि लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पूरे क्षेत्र में विधि व्यवस्था एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अवैध शराब, आग्नेयास्त्र एवं मादक पदार्थ की बरामदगी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है। इसी क्रम में गुप्त सूचना मिली कि कुछ नशा कारोबारियों के जरिये प्रतिबंधित नशीला पदार्थ को अवैध रुप से चार पहिया वाहन में लोड कर लाया जा रहा है। सूचना के बाद डीएसपी प्रकाश सोय के नेतृत्व में वाहनों की चेकिंग शुरू की गयी।

निर्देश

रेल साइडिंग का निरीक्षण करने खलारी पहुंचे डीआरएम धनबाद

अपनी रेल पटरियों का मंटेनेंस करे सीसीएल



नवीन मेल संवाददाता। खलारी मंडल रेल प्रबंधक धनबाद केके सिन्हा रेल साइडिंगों का निरीक्षण करने शनिवार को खलारी रेलवे स्टेशन पहुंचे। खलारी स्टेशन पहुंचने पर स्टेशन अधीक्षक जान सौरंग ने उनका स्वागत किया। जिसके बाद डीआरएम खलारी

आदर्श विद्यालय खलारी की नेहा प्रिया व सोनाली 11वीं में रहीं अव्वल



नवीन मेल संवाददाता। खलारी झारखंड अर्धविव परिषद द्वारा आयोजित 11वीं परीक्षा में आदर्श विद्यालय शांतिनगर खलारी की छात्राएं तीनों संकाय में विद्यालय में सर्वोधिक अंक लाईं। कला संकाय में नेहा कुमारी 77.6 प्रतिशत, विज्ञान संकाय में प्रिया कुमारी 73.2 प्रतिशत व वाणिज्य संकाय में सोनाली कुमारी 81.2 प्रतिशत अंक लाने में सफल रही। कला संकाय में कुल 43, विज्ञान में 12 तथा वाणिज्य संकाय में 06 विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए थे। विद्यालय का

रिजल्ट शत प्रतिशत रहा। वर्षा 2023 से ही इस विद्यालय में इंटरमीडिएट के तीनों संकायों की पढ़ाई शुरू हुई है। प्रधानाध्यापक फादर आस्कर टोपों ने सभी विद्यार्थियों को बधाई एवं आशीर्वाद देते हुए कहा कि बारहवीं का रिजल्ट शत प्रतिशत हो इसके लिए और कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। विद्यालय के प्रबंधक ने सभी सफल विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को शत प्रतिशत रिजल्ट के लिए बधाई दिया और कहा कि बारहवीं के पढ़ाई के लिए जो विद्यालय को आवश्यकता होगी उसे

तत्काल ही उपलब्ध करा दी जाएगी। बच्चों को बधाई देने वाले शिक्षकों में प्रमोद प्रसाद, सुमनतेरेसा खलखो, पवनकुमार चन्द्रवंशी, विक्रम सिंह, संध्या टोपों, अन्ना कारमेल, रेणु गिरि, नवीन कुजूर, हेमामाधुरी लकड़ा, रोजलिन कुजूर, रोबर्ट कुजूर, नैमसी लकड़ा, हेमलता कुमारी, प्रफुल्लित मिंज, विनीता टोपों, सुजीत भंगरा, अर्चना रोज, अनाससिया बारला, मेरी ग्रेस खलखो, सुष्मारजनी मिंज, एलिन बागे, प्रमिला कुल्लू आदि शामिल हैं।

धूमधाम से मनाई गई सीता नवमी



नवीन मेल संवाददाता। खूंटो। विश्व हिंदू परिषद की तोरपा प्रखंड समिति के तत्वावधान में तोरपा मेन रोड स्थित बजरंग बली मंदिर प्रांगण में शनिवार को सीता नवमी महोत्सव का आयोजन किया गया। मौके पर पंडित कृष्णा पाढ़ी ने विधि-विधान से धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराया। आरती के बाद खीर प्रसाद का वितरण किया

महावीर मंदिर के पुजारी हेमचंद्र झा ने संध्या आरती के बाद सीता पाठ कर कार्यक्रम का समापन किया

गया। अपराह्न दो बजे से प्रयागराज उत्तर प्रदेश से पधारे पंडितों ने सुंदरकांड का सामूहिक पाठ किया। महावीर मंदिर पुजारी हेमचंद्र झा ने

धन-शोधन के आरोपी डीजीएम सहित तीन की अग्रिम जमानत पर सुनवाई 14 जून को

नवीन मेल संवाददाता। रांची झारखंड हाई कोर्ट में धन-शोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) मामले में आरोपित इंडो डेनिश टूल रूम, जमशेदपुर के पूर्व डीजीएम आशुतोष कुमार, उनकी पत्नी चयनिका एवं रिश्तेदार केशव वत्स की अग्रिम जमानत याचिका की सुनवाई शनिवार को हुई। मामले में कोर्ट ने इंडी को जवाब दाखिल करने का निर्देश देते हुए अगली सुनवाई की तिथि 14 जून निर्धारित की है। इंडी ने सीबीआई के दर्ज केस के अनुसंधान में आशुतोष कुमार एवं अन्य पर मनी लॉन्ड्रिंग करने का मामला पाया है। इसके बाद पीएमएलए एक्ट में इनपर ईसीआईआर 2/2024 केस दर्ज किया गया। साथ ही पीएमएलए एक्ट की सुसंगत धाराओं के तहत आशुतोष कुमार, उनकी पत्नी चयनिका कुमारी एवं रिश्तेदार केशव वत्स को मामले में आरोपित बनाया है।

गौशाला में फॉर्गर किट का किया गया ट्रायल झुमरी तिलैया। प्रेरणा शाखा ने जीव दया कार्यक्रम के तहत एक सार्थक पहल करते हुए गर्मी में मवेशियों को भी कुल- कुल का एहसास हो इसी उद्देश्य को लेकर ट्रायल के तौर पर फॉर्गर किट का शुभारंभ किया गया। इसे शेड में बने स्थल पर कुछ ऊंचाइयों पर लगाया गया ताकि उसके फॉर्ग से नीचे गिरने वाले पानों के जरिए इस गर्मी में मवेशियों को ठंड का एहसास हो सके।

भाजपा की रैली पर पथराव, थाना में आवेदन

हजारीबाग। हजारीबाग के बड़कागांव प्रखंड के बादम गांव में असमाजिक तत्वों द्वारा भाजपा के मोटरसाइकिल रैली पर पथराव किया गया। इसके साथ ही रैली में शामिल कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट भी की गई। इस मारपीट में दो भाजपा कार्यकर्ता विककी राणा और दिवाकर नायक घायल हो गए, जिन्हें बड़कागांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्राथमिक उपचार के बाद हजारीबाग रेफर कर दिया गया।ज्ञात हो कि मोटरसाइकिल रैली पर हमले के आरोप में बड़कागांव थाना पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। इसमें मोहम्मद मोदी, मोहम्मद नासीब और जिसान खान शामिल हैं। इनके अलावा 50 से 60 अज्ञात लोगों के विरुद्ध आवेदन दिया गई है। थाने में दिए गए आवेदन में कहा गया है कि नयाटांड मंगल बाजार से मोटरसाइकिल रैली निकाली गई थी जो वापसी के क्रम में बड़कागांव मस्जिद के पास से गुजर रही थी। इस दौरान वहां मौजूद कुछ युवकों द्वारा नारा लगाए जाने लगा, जिसपर इन्होंने आपत्ति जताई तो वे जाति सूचक संबोधन करते हुए मारपीट करने लगे, जिससे कई लोग घायल हो गए।

दो दिवसीय मंडा पूजा का विधि-विधान से समापन

दहकते अंगारों पर नंगे पांव चल भक्तों ने दिखाई आस्था



नवीन मेल संवाददाता। चान्हो थाना क्षेत्र के लेस्पर गांव में आयोजित दो दिवसीय मंडा पूजा शनिवार की शाम संपन्न हो गया। इस अवसर पर मेले का भी आयोजन किया गया। जिसमें आसपास के दर्जनों गांव से सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित हुए। इससे पूर्व शुक्रवार की शाम आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर लोहरदगा

लोकसभा के सहसंयोजक युवा भाजपा नेता सन्नी टोपों उपस्थित थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि परंपरा और संस्कृति झारखंड की पहचान है। मंडा पूजा में फूल खुंदी के दौरान जो आस्था और भक्ति और विश्वास देखने को मिलता है वह झारखंड की प्राचीन परंपरा की एक झलक है। क्या बच्चे क्या बुजुर्ग

क्या नौजवान सभी की आस्था इस दौरान देखते बनती है। हमें अपने पूर्वजों द्वारा संजोए गए इस परंपरा को सहेज कर रखना है उन्होंने लोगों को इतने लोहार की बधाई दी। इस मौके पर रामपाल सिंह, विजय कुमार, सिंह पप्पू तिवारी, मृत्युंजय सिंह, तिरंगा पंचायत की मुखिया पूनम उदय सहित अन्य मौजूद थे।

संत जेवियर इंटर कॉलेज में एकदिवसीय योग शिविर का हुआ आयोजन

जीवन जीने की कला ही योग है : रेव्ह फादर तिकी



नवीन मेल संवाददाता। रांची स्पोर्ट्स योगा एसोसिएशन ऑफ झारखंड के तत्वावधान में शनिवार को संत जेवियर इंटर कॉलेज में एकदिवसीय योग शिविर का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) की तैयारी को लेकर योग शिविर का आयोजन हुआ था। शिविर में छात्रों को योग द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई गई। उन्हें बताया गया कि कैसे छात्र अपने जीवन में योग को अपनाकर पढ़ाई के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं एवं तनाव से बच रह सकेंगे। योग शिक्षक

राहुल पोद्दार एवं इंदु महतो ने छात्र-छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर किए जाने वाले आसनों का अभ्यास कराया। मौके पर संत जेवियर इंटर कॉलेज के प्रधानाध्यापक रेव्ह फादर अजय अनिल तिकी, एसजे भी उपस्थित थे। उन्होंने योग के बारे में बताते हुए कहा कि जीवन जीने की कला ही योग कहते हैं। योग हर उम्र हर वर्ग के लोगों को करना चाहिए। योग से हमारा शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक का विकास होता है। उन्होंने अपने सभी विद्यार्थियों को प्रतिदिन योग को अपने जीवन में लाने को कहा।

न्यूज बॉक्स

संत माइकल स्कूल मुरी में ‘वाटर मेलन डे’ कार्यक्रम आयोजित



सिल्ली। संत माईकल +2 स्कूल मुरी में शनिवार को वाटर मेलन डे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वर्ग नर्सरी से वर्ग दो तक के बच्चों को सम्मिलीत किया गया। बच्चे इस मौके पर लाल हरी पोशाक पहनकर शामिल हुए। इस मौके पर विद्यार्थियों ने वाटर मेलन से सम्बन्धित तरह-तरह के पोस्टर, चार्ट, चित्रकारी इत्यादी बना कर विद्यालय लेकर आए थे। इस कार्यक्रम के दौरान सभी विद्यार्थीओं के बीच तरबूज का वितरण किया गया जिसे बच्चों ने बड़ी आनंद के साथ खाया। कार्यक्रम में स्कूल के निदेशक राकेश कुमार ने बच्चों के बीच वाटर मेलन खाने के फायदे और इसकी खूबी के बारे में जानकारी साझा की और यह भी बताया कि वाटर मेलन में पानी की अत्यधिक मात्रा पाई जाती है जो शरीर के लिए बहुत ही लाभदायक है। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य सीएल प्रजापति ने कार्यक्रम की सराहना कि साथ ही बच्चों का उत्साह भी बढ़ाया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका रीना साहु ने किया साथ ही विद्यालय के अन्य शिक्षक एवं शिक्षिकाएं शोभा शर्मा, श्वेता सिंह, दीपिका कुमारी, प्रशांत गोरई, प्रिती सिंह, श्वेता सिंह पांडे, आदि मौजूद थे।

करा के कठसेमला में 15 दिनों में आ जाएगी बिजली : कोवे मुंडा



खूंटो। करी प्रखंड के कठसेमला गांव के लोगों को अब बिजली के लिए अधिक दिन इंतजार करना नहीं पड़ेगा। गांव में 15 दिनों में बिजली आ जायेगी। इस बात का आश्वासन शनिवार को तोरपा के विधायक कोवे मुंडा ने ग्रामीणों को दिया। विधायक कठसेमला गांव के ग्रामीणों की शिकायत पर वहां पहुंचे थे। मौके पर उन्होंने विद्युत विभाग के सहायक अभियंता शैलेश कश्यप को भी गांव बुलाया था। सहायक विद्युत अभियंता ने कहा कि ग्रामीणों का सहयोग मिला तो 15 दिनों में गांव में बिजली जलने लगेगी। उन्होंने बताया कि बिजली के खंभे गाड़ने का कुछ ग्रामीणों द्वारा विरोध किये जाने के कारण काम आगे नहीं बढ़ पाया था। गांव के ही पवन गोप ने कहा कि गांव में बिजली के लिए 2018-19 में ही पोल लगाने का काम शुरू किया था लेकिन गांव के एक व्यक्ति द्वारा अपनी जमीन पर पोल गाड़ने का विरोध करने के कारण काम बंद कर दिया गया था। इसके बाद से इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस मौके पर हनु नू पाहन, पवन कुमार गोप, अरविंद कुमार गोप, भाजपा नेता विनोद सिंह, भागीरथ राय, महावीर साहु, सुखनंदन नाग, सुनील धान, अनिल धान और जाकशी धनवार सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

रांची ईडी कोर्ट से साहिबगंज के पत्थर कारोबारी कृष्णा साहा की याचिका खारिज

रांची। ईडी के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की कोर्ट ने शनिवार को साहिबगंज के पत्थर कारोबारी कृष्णा कुमार साहा की ओर से निचली अदालत में सशरीर उपस्थिति से छूट संबंधी याचिका को खारिज कर दिया। मामले में कृष्णा साहा को हाई कोर्ट से सात दिसंबर, 2023 को जमानत मिल चुकी है। उसके खिलाफ अब ईडी कोर्ट में आरोप गठन हो चुका है। पांच जुलाई, 2023 को दस घंटे की पूछताछ के बाद ईडी ने उसे देर रात गिरफ्तार कर लिया था। ईडी ने 1250 करोड़ के अवैध पत्थर खनन मामले में मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपित कृष्णा के ठिकाने पर जुलाई 2022 में छापेमारी की थी। साहिबगंज जिले के बड़हरवा निवासी कृष्णा कुमार साहा को मुख्यमंत्री के बरहट विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा का खास सहयोगी माना जाता है। कृष्णा साहा के अवैध पत्थर खदान में दो मजदूरों की दुर्घटना में मौत हो गई थी। जांच के क्रम में ईडी ने पूर्व में कृष्णा साहा के बड़हरवा के चंपांड मौजा के पत्थर खदान की ड्रेन से मापी ली थी। वहां के कर्मियों के मोबाइल और कागजात भी जब्त किए गए थे। छानबीन में जानकारी मिली थी कि लीज एरिया से कई गुणा अधिक खनन किया गया है।

हेमंत सोरेन से जुड़े जमीन घोटाला मामले के तीन आरोपियों को भेजा गया जेल

रांची। ईडी ने पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से जुड़े जमीन घोटाले मामले में गिरफ्तार हजारीबाग के डीड राइट इरशाद अख्तर, तापस घोष और संजीत कुमार की रिमांड अवधि खत्म होने पर शनिवार को कोर्ट में पेश किया। ईडी के विशेष न्यायाधीश राजीव रंजन की अदालत ने पेशी के बाद तीनों आरोपितों को न्यायिक हिरासत में बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारागार भेज दिया। तापस घोष और संजीत कुमार रजिस्ट्रार ऑफ एग्जोरेंस कोलकाता के कर्मी हैं। ईडी ने इन तीनों को नौ मई को गिरफ्तार किया था। जमीन घोटाला मामले में पूर्व में गिरफ्तार आरोपितों से पूछताछ और दस्तावेजों की छानबीन के बाद इन तीनों ईडी ने गिरफ्तार किया था। हजारीबाग कोर्ट के डीड राइट इरशाद मूल दस्तावेज में हेराफेरी कर फर्जी डीड तैयार करता था जबकि द रजिस्ट्रार ऑफ एग्जोरेंस कार्यालय, कोलकाता के कर्मी तापस घोष पर कार्यालय से जमीन के मूल दस्तावेज को गायब करने का आरोप है। संजीत कुमार पर भी कार्यालय से डीड गायब करने का आरोप है। ईडी ने इस मामले में पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सहित 11 आरोपितों की गिरफ्तार किया है।

बड़कागांव में भाजपा कार्यकर्ता पर हमले के जिम्मेदार हैं कांग्रेस-झामुमो : आदित्य साहू

रांची। भाजपा के प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू ने बड़कागांव में भाजपा कार्यकर्ता पर हुए हमला के लिए कांग्रेस और झामुमो को जिम्मेदार बताया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस- झामुमो की तुष्टिकरण की राजनीति के कारण एक खास तबके का मन खूब गया है। प्रदेश में बहुसंख्यक समाज पर हमला करने से एक खास तबका जरा भी कतराता नहीं है। इसका मुख्य कारण है एक तरफा कार्रवाई। साहू ने शनिवार को एक बयान जारी कर कहा कि बड़कागांव मामले में भी भाजपा कार्यकर्ता पर हमला मनबूढ़ होने का ही प्रमाण है। उन्होंने कहा कि बड़कागांव में भाजपा की शांतिपूर्वक मोटरसाइकिल रैली हो रहा था इस क्रम में रैली के सबसे अंतिम पंक्ति में शामिल भाजपा के कार्यकर्ता को जिस प्रकार से रोककर पीटा गया है वह तुष्टिकरण की राजनीति के कारण हमला दिखता है।

हिंदपीढ़ी : निगम का टैंकर एक किलोमीटर दूर होता है खड़ा

चापानल सूखा, सप्लाई का पानी भी नसीब नहीं

अमित कुमार । रांची

गर्मी की तपिश के बीच हिंदपीढ़ी में पानी को लेकर परेशानी काफी बढ़ गई है। हालात ऐसे हो गए हैं कि लोग पानी को जमा करके रख रहे हैं। साथ ही, कोई पानी नहीं मांग ले, इस डर से इसे छिपाकर भी रख रहे हैं। हिंदपीढ़ी क्षेत्र में जलस्तर नीचे चले जाने से चापानल से पानी नहीं निकल रहा है। वहीं, सप्लाई पानी कि स्थिति ऐसी है कि इसके शुरू होते ही टंकी भरने के लिए सभी घरों में मोटर चालू हो जाता है। इस कारण पानी की पाइपलाइन के अंतिम हिस्से में रहने वाले लोगों के घरों तक पानी पहुंच ही नहीं पा रहा है। दूसरी ओर, नगर निगम का टैंकर आता है, तो वह किसी खास जगह पर खड़ा कर दिया जाता है। इससे उसके आसपास के घरों में रहने वाले लोगों को पानी असानी से मिल जा रहा है। लेकिन, जिनका घर एक किलोमीटर या उससे अधिक दूरी पर है, उनका तो पूरा दिन पानी लेने में ही निकल जा रहा है।

बंद पड़े हैं सभी मिनी एचवाईडीटी

हम बात कर रहे हैं हिंदपीढ़ी की उस एक गली की, जो मेन रोड से होते हुए सीधा गुरुनानक स्कूल तक जाती है। इस मार्ग की लंबाई करीब 2.5 किलोमीटर है, जिसमें एक हजार से अधिक घर बने हुए हैं। यहां पर सभी मिनी एचवाईडीटी बंद पड़े हैं। इसे लेकर लोग कई बार पापंद तक गए, लेकिन पापंद ने भी निराश कर दिया। पापंद का कहना है कि वर्तमान में नगर निगम ही सारा काम देख रहा है। ऐसे में आप को निगम के पास जाना

सप्लाई का पानी आते ही टंकी भरने के लिए मोटर हो जाते हैं चालू



सप्लाई पानी ही एक मात्र सहारा है। और, जब पानी नहीं आता है, तो स्टोर किए गए पानी का उपयोग करते हैं। लेकिन, कब तक ऐसा कर पाएंगे। टैंकर व्यवस्था हर जगह हो, तो अच्छे है।



तेजु खान ।

नगर निगम का मिनी एचवाईडीटी किसी काम का नहीं है। बोरिंग में पानी जमा होने पर आता है। बाकी समय सप्लाई पानी का इंतजार करना होता है। और, टैंकर का पता नहीं, कब आता है।

फुलो बेगम ।

जिन लोगों को पानी संबंधी कोई भी परेशानी है, वे नगर निगम में आवेदन देंगे, तो तुरंत काम हो जाएगा। यदि किसी को अतिरिक्त पानी की आवश्यकता है, तो वे नगर निगम को शुल्क दे कर निजी कार्यों के लिए मंगा सकते हैं।

- अमित कुमार, आयुक्त, रांची नगर निगम।

पारस हॉस्पिटल में ईपीएस-आरएफए से दिल के मरीज की बचाई गई जान

नवीन मेल संवाददाता। रांची

एचईसी स्थित पारस हॉस्पिटल में पहली बार इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी स्टडी (ईपीएस) और रेडियो फ्रीक्वेंसी एब्लेशन (आरएफए) कर मरीज की जान बचाई गई है। 60 वर्षीय मरीज को लगातार एक माह से हर दिन पीएसवीटी के एपिसोड हो रहे थे। उन्हें रोज चक्कर आता था और आंखों के सामने अधेरा छा जाता था। धड़कन बहुत तेजी से चलने लगता था। इस अटैक के कारण मरीज दो बार गिर भी चुके थे। घर से निकलने में भी डर लगता था कि कब चक्कर आ जाए। बताया गया कि यह बीमारी उन्हें पांच वर्षों से थी। इसके लिए वे दवा भी ले रहे थे। लेकिन, एक माह से दवा लेने के बाद उनकी बीमारी बढ़ गई थी। इस बीमारी को लेकर मरीज पारस हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ कुंवर अभिषेक आर्य से मुलाकात की और अपनी तकलीफ बताई। डॉक्टर को मरीज का ईसीजी रिपोर्ट भी दिखाया। रिपोर्ट देखने के बाद डॉ अभिषेक आर्य ने कहा कि उन्हें पराबिसमल सुप्रावेंटिकुलर टैकोकार्डिया (पीएसवीटी) है। इसका इलाज इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी अध्ययन (ईपीएस) और रेडियो फ्रीक्वेंसी एब्लेशन



कार्डियोलॉजिस्ट डॉ अभिषेक आर्य ने किया सफल इलाज

(आरएफए) से होगा। इसके बाद मरीज का ईपीएस किया गया, जिसमें एंट्रियोवेंटिकुलर नोडा रिस्सिप्रोकेटिंग टैकोकार्डिया (एवीएनआरटी) बीमारी पाई गई। डॉ अभिषेक आर्य ने ईपीएस और आरएफए कर मरीज को ठीक कर दिया। मरीज को अगले दिन डिस्चार्ज कर दिया गया।

सदर अस्पताल सुपरस्पेशिएलिटी की तर्ज पर संचालित होना आवश्यक : चैंबर

एफजेसीसीआई हेल्थ उप समिति की बैठक में चर्चा

नवीन मेल संवाददाता। रांची

फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (एफजेसीसीआई) की हेल्थ उप समिति की बैठक शनिवार को चैंबर भवन में हुई। बेहतर चिकित्सकीय सुविधा की उपलब्धता के लिए सदर अस्पताल को सुपरस्पेशिएलिटी क्लिनिक के तौर पर संचालित करने के लिए सदस्यों द्वारा चर्चा की गई। बैठक में कहा गया कि निजी अस्पतालों के सहयोग से सदर अस्पताल को सुपरस्पेशिएलिटी क्लिनिक के तौर पर संचालित किया जा सकता है। इससे अस्पताल में वैसी सुविधा जैसे ज्वाइंट रिलेसमेंट, बोन मैरो ट्रांसप्लांट सहित अन्य बीमारियों के लिए, जिसके डॉक्टर रांची में कम हैं तथा सदर अस्पताल में नहीं हैं,



वहां आसानी से विशेषज्ञ चिकित्सक उपलब्ध होंगे। सदर अस्पताल में यह सुविधा उपलब्ध होने से जरूरतमंद तथा वैसे लोग जो कॉर्पोरेट अस्पताल की सुविधा अफोर्ड नहीं कर सकते, उन्हें काफी सुविधा मिलेगी। यह निर्णय लिया गया कि चैंबर द्वारा सिविल सर्जन को इससे संबंधित प्रस्ताव प्रेषित किया जाएगा। सदस्यों द्वारा यह भी कहा गया कि नए अस्पतालों को भी आयुष्मान योजना का एफिलिएशन जल्द प्राप्त हो, ताकि जनमानस को इसका लाभ मिल सके। चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री के आग्रह पर शैलबी डिवान सुपरस्पेशिएलिटी अस्पताल प्रबंधन द्वारा जिनकी

अंगुली पर वोट का निशान होगा, उनका फ्री हेल्थ चेकअप करने की भी सहमति दी गई। चैंबर महासचिव परेश मण्नी और कार्यकारिणी सदस्य प्रवीण लोहिया ने संयुक्त रूप से अवगत कराया कि हेल्थ चेकअप कैंप चैंबर के बैनर तले ओल्ड एचबी रोड, सिरमटोली स्थित शैलबी डिवान सुपरस्पेशिएलिटी अस्पताल में 28 मई को लगाया जाएगा, जो सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलेगा। व्यवसायियों को अपने हेल्थ के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जल्द ही चैंबर भवन में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा जागरूकता कार्यशाला के आयोजन का भी निर्णय लिया गया।

मुख्य सचिव ने रांची में निर्माणाधीन अर्बन हाट योजना पर मांगी रिपोर्ट

नवीन मेल संवाददाता। रांची

मुख्य सचिव एल खिंयाने ने रांची के कार्कि में निर्माणाधीन अर्बन हाट योजना की पूरी स्थिति पर रिपोर्ट मांगी है। इस संबंध में उन्होंने शनिवार को नगर विकास विभाग को पत्र लिखा है। मुख्य सचिव ऑफिस के निर्देश के बाद नगर विकास विभाग ने भी नगर आयुक्त, रांची नगर निगम को अर्बन हाट योजना की स्थिति पर अद्यतन रिपोर्ट देने को कहा है। राजधानी रांची में अर्बन हाट निर्माण योजना में करीब 10 करोड़ रुपये खर्च करने के बाद इसे बंद कर दिया गया है, यानी इतनी राशि इसमें बर्बाद भी हो गई और योजना अब भी धरातल पर नहीं उतरी। वर्ष 2016 में ही अर्बन हाट योजना बनाने का काम शुरू किया गया था। जिस स्थान पर काम प्रारंभ हुआ, वहां जंगल-झाड़ पहले से काफी था। हालांकि, बाद में तत्कालीन मुख्यमंत्री ने इसकी उपयोगिता पर सवाल उठाए और



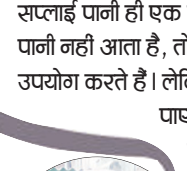
नगर विकास विभाग को लिखा पत्र

इसे बंद करने का आदेश दिया। अधूरे निर्माण को पूरा करके वहां पर स्क्रल डेवलपमेंट सेंटर या गलर्स हॉस्टल बनाने पर विचार हुआ, लेकिन अब भी यह कामजों पर ही है। व्यापारियों को बड़ा बाजार देने की सोच से अर्बन हाट योजना पर काम प्रारंभ किया गया था। स्थानीय शिल्पकार, पारंपरिक भोजन और कलाकारों को बड़ा मंच मुहैया कराने के लिए अर्बन हाट का निर्माण किया जाना था।

क्या कहते हैं आम लोग

रेन मस्जिद से काफी दूरी पर ग्वाला टोली है। यह लगभग एक किलोमीटर है। निगम का टैंकर जब भी आता है, तो वहाँ पर लगा देता है। ऐसे में इतनी दूर से पानी लाना संभव नहीं है।

एमडी एजुल ।



सप्लाई पानी ही एक मात्र सहारा है। और, जब पानी नहीं आता है, तो स्टोर किए गए पानी का उपयोग करते हैं। लेकिन, कब तक ऐसा कर पाएंगे। टैंकर व्यवस्था हर जगह हो, तो अच्छे है।



तेजु खान ।

नगर निगम का मिनी एचवाईडीटी किसी काम का नहीं है। बोरिंग में पानी जमा होने पर आता है। बाकी समय सप्लाई पानी का इंतजार करना होता है। और, टैंकर का पता नहीं, कब आता है।

फुलो बेगम ।

जिन लोगों को पानी संबंधी कोई भी परेशानी है, वे नगर निगम में आवेदन देंगे, तो तुरंत काम हो जाएगा। यदि किसी को अतिरिक्त पानी की आवश्यकता है, तो वे नगर निगम को शुल्क दे कर निजी कार्यों के लिए मंगा सकते हैं।

- अमित कुमार, आयुक्त, रांची नगर निगम।

पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहतर अपशिष्ट निपटान की आदत अपनाना समय की मांग

एनटीपीसी कोयला खनन मुख्यालय में रसोई अपशिष्ट प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता। रांची

चल रहे स्वच्छता पखवाड़ा पहल के हिस्से के रूप में, एनटीपीसी कोयला खनन मुख्यालय, एनएमएल रांची ने शनिवार को 'अर्बन खेती' (अपशिष्ट प्रबंधन और जैविक खेती पर काम करने वाला संगठन) के सहयोग से स्वयंसेवा लैडीज क्लब (एसएसएलसी) के सदस्यों के लिए रसोई अपशिष्ट प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को शहरी कचरे को कम करने, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण के महत्व से अवगत कराया गया। ऐसा देखा गया है कि जन जागरूकता और बुनियादी ढांचे की कमी के कारण, शहरी समुदायों में रिसाइक्लिंग अभी भी मुख्यधारा की प्रक्रिया नहीं है। पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहतर अपशिष्ट निपटान की आदत को अपनाना समय की मांग है।

इसे ध्यान में रखते हुए, कार्यशाला का आयोजन प्रतिदिन रसोई के कचरे के पुनः



उपयोग पर ध्यान केंद्रित करते हुए किया गया था। बताया गया कि रसोई के कचरे को एक विशेष प्रक्रिया के माध्यम से न्यूनतम प्रयासों के साथ जैविक खाद में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है। साथ ही, निश्चित प्रक्रिया का पालन करके दिन-प्रतिदिन के रसोई के कचरे को खाद में परिवर्तित किया जा सकता है, जो कि

घरेलू पौधों और पेड़ों की वृद्धि के लिए अच्छा है। कार्यक्रम में एसएसएलसी की अध्यक्ष रेखा जैन और लैडीज क्लब की सदस्य उपस्थित थीं। इस अवसर पर प्रकाश कुमार, विनोद कुमार, मैनेजिंग पार्टनर्स और सबीना परवीन, परियोजना समन्वयक, अर्बन खेती उपस्थित थीं।

छात्र आजसू ने छात्रों के निलंबन मामले की पुनः जांच की मांग की



नवीन मेल संवाददाता। रांची

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय (डीएसपीएमयू) में छात्र आजसू की टीम ने शनिवार को विश्वविद्यालय के कुलपति का घेराव किया। साथ ही, कुलपति को एक ज्ञापन भी सौंपा गया। ज्ञापन में कहा गया है कि विश्वविद्यालय प्रशासन ने 14 मई 2024 को मेमो संख्या डीएसपीएमयू/ जी/347/24 से तीन छात्रों को विश्वविद्यालय से निलंबित कर दिया और उन्हें भविष्य में विश्वविद्यालय से नामांकन के लिए वर्जित भी कर दिया। ज्ञापन में जिस घटना के बाद यह कार्रवाई की गई, उस घटना का क्रमवार जिक्र करते हुए कहा गया है कि जब छात्र आजसू की

टीम ने इसे संज्ञान में लिया, तो पाया गया कि जांच पूरी तरह से एक तरफा की गई है। जांच में किसी भी कमेटी का कोई योगदान नहीं है। जांच में छात्रों के लिए क्रिमिनल, चोर जैसे शब्द का प्रयोग कुलासचिव और डीएसडब्ल्यू द्वारा किया गया है। आजसू छात्र संघ ने कुलपति से मांग की कि जांच कमेटी पुनः बनाई जाए और सही तरीके से जांच की जाए। तब कुलपति ने आशा देते हुए कहा कि जांच कमेटी पुनः बनेगी और इसकी पुनः जांच होगी। आजसू छात्र संघ ने कुलपति से छात्र हित में मांग की कि राजनीति शास्त्र विभाग के दोनो पक्षों को सामान्य रूप से माफिनामा लिखवा कर लिया जाए।



एक नजर

बोलबा के किलेसेरा गांव में बजरंगबली मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा 23 मई को

बोलबा। बोलबा प्रखण्ड के किलेसेरा गाँव में आगामी 23 मई को बजरंगबली मूर्ति का प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।।आयोजन समिति ने बताया कि इस मौके पर 23 मई 2024 को प्रातः 6 बजे कलश यात्रा, 8 बजे बजरंगबली हनुमान मूर्ति का प्राण-प्रतिष्ठा, प्रातः 8 बजे से अष्ट प्रहरी अखण्ड हरि कीर्तन नाम यज्ञ आरम्भ होगी। बताया गया कि इस मौके पर विभिन्न गांवों से कीर्तन मण्डली को आमंत्रित किया गया है। साथ ही हिन्दू समाज के कई वरिष्ठ लोगों को भी आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम की सारी तैयारी पूरी कर ली गई है इस मौके मधु तिकी, धनीराम बेहरा, पलटन बेहरा, चक्रधर महानדיया, नकुल माँझी, ललन माँझी, जुगल बेहरा एवं अन्य लोग मौजूद थे।

हाई स्कूल ओडगा, भेलवाडीह एवं कोलेबिरा में होगी प्लस टू की पढ़ाई सिमडेगा। जिले के सभी मैट्रिक पास छात्रों का इंटर में आसानी से नामांकन हो सके, इसके लिए विभाग ने तीन हाई स्कूल को प्लस टू स्कूल में मर्ज किया है। मर्ज स्कूलों में जलडेगा के हाई स्कूल ओडगा, पाकरटांडु के हाई स्कूल भेजवाडीह और हाई स्कूल कोलीबिरा शामिल है। इन तीनों प्लस टू स्कूलों में इंटर में नामांकन शुरू हो चुका है। तीन हाई स्कूल को प्लस टू स्कूलों में मर्ज किए जाने से इन स्थानों के छात्रों को इंटर की पढ़ाई करने में काफी सहूलियत होगी। इन स्थानों के छात्रों एवं अभिभावकों ने हर्ष व्यक्त किया है। छात्रों एवं अभिभावकों ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि ओडगा, कोलेबिरा एवं भेलवाडीह में इंटर कॉलेज की बहुत अधिक जरूरत थी। ऐसे में इन स्थानों के स्कूलों को प्लस टू स्कूल में मर्ज किए जाने से मैट्रिक पास करने वाले छात्रों की पढ़ाई नहीं रुकेगी। उन्होंने कहा कि प्लस टू स्कूलों की दूरी अधिक रहने के कारण कई होनहार छात्रों की पढ़ाई छूट जाती थी। वहीं कई अभिभावक अपने बच्चों की इंटर की पढ़ाई कराने को लेकर परेशान रहते थे।

सैनिक स्कूल तिलैया में फुटबॉल टूर्नामेंट के दूसरे दिन भी खेल स्पर्धा जारी

चंदवारा। सैनिक स्कूल तिलैया में शुरू हुए अखिल भारतीय सैनिक स्कूल फुटबॉल टूर्नामेंट 2024 के दूसरे दिन शुक्रवार को भी खेल स्पर्धा का आयोजन हुआ। इसमें जूनियर बालिकाओं में बालाचट्टी गुजरात और संबलपुर ओडिशा में, सब-जूनियर बालक वर्ग में अमेठी उत्तर प्रदेश और कजाकुट्टम केरल में, कुंजपुर हरियाणा और झुंझुनू राजस्थान में, जूनियर बालक वर्ग में कपूरथला पंजाब और अमरावती नगर तमिलनाडु में, इंस्ट्रुक्शियन अरुणाचल प्रदेश और गोपालगंज बिहार के बीच फुटबॉल खेल का आयोजन हुआ। बालिका वर्ग में संबलपुर ने बालाचट्टी को 0-5 से हराकर जीत हासिल की। जबकि सब- जूनियर बालक वर्ग में अमेठी ने कजाकुट्टम को 0-5 से हराकर जीत अंश के नाम की। सब जूनियर वर्ग में हीं झुंझुनू ने कुंजपुरा को 0-2 से हराकर इस स्पर्धा को जीता।

राष्ट्रीय मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा में पीयूष कुमार ने की सफलता हासिल पढ़ाई के लिए 9 से 12वीं कक्षा तक प्रत्येक वर्ष मिलेगी प्रोत्साहन राशि

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ मांडू प्रखंड के उत्कृष्टतम मध्य विद्यालय गोविंदपुर के 8वीं कक्षा के छात्र पीयूष प्रजापति ने राष्ट्रीय मेधा छात्रवृत्ति 2023 -24 में सफलता प्राप्त कर विद्यालय सहित पूरे जिले का नाम रोशन किया है। यह परीक्षा जनवरी माह में आयोजित की गई थी। छात्र पीयूष कुमार को 9 से 12 वीं कक्षा तक प्रत्येक वर्ष छात्रवृत्ति सरकार के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए दिया जाएगा। इस सफलता पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉक्टर सुनील कुमार कश्यप ने उन्हें बधाई दी और कहा कि इस सफलता से विद्यालय के और छात्रों को प्रेरणा देने की जरूरत है। छात्र अमर कठिन परिश्रम करेगे तो उन्हें सफलता जरूर प्राप्त होगी।

छात्र के सफलता हासिल करने पर मांडू प्रखंड विकास पदाधिकारी और प्रखंड शिक्षा प्रसाद पदाधिकारी, विद्यालय के सहायक अध्यापक सदानंद शर्मा, गौतम कुमार गुप्ता, जेठालाल मांझी, विद्यालय

सिमडेगा के खिजरी तारापुर में सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा, प्रशासन ने कराया काम बंद

नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा सिमडेगा शहरी क्षेत्र के वार्ड 16 अंतर्गत खिजरी तारापुर में सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा की शिकायत पर पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी पहुंचकर काम बंद करवाया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार शनिवार को खिजरी तारापुर वार्ड नंबर 16 में पहाड़ के नीचे जिस तरफ लगभग 70 से 80 डिंसमिल सरकारी भूमि पर कुछ लोगों के द्वारा कब्जा किया जा रहा था। जहां मौके पर ग्रामीणों ने कि कांग्रेस नेता दिलीप को बुलाया लोगों ने बताया कि यहां इस सरकारी भूमि पर जहां सामुदायिक भवन बना हुआ है।यही एक जगह है जहां बच्चे मैदान के रूप में है जहां बच्चे खेलते हैं, कोई भी पारिवारिक या गांव का कार्यक्रम किया जाता रहा है। अचानक यहां जैसीबी चली नींव कटा और ईंट बालू गिरना शुरू हो गया। मना

विभागीय निर्देश के बाद भी सदर हॉस्पिटल में नहीं खुले हीट कॉर्नर

कोडरमा। सरकार का निर्देश के बावजूद सदर हॉस्पिटल में हीट कॉर्नर नहीं खुले। हालांकि विभागीय निर्देश पर हीट वेव से बचने के लिए सदर हॉस्पिटल में जागरूकता कार्यक्रम किया गया था। इसके तहत बचाव के उपाय बताकर लोगों को जागरूक किया गया था। पर हॉस्पिटल के वार्डों में कुलर तो लगी है,लेकिन ठंडा पानी तो छोड़ दीजिए ,पिने का पानी भी पर्याप्त नहीं मिल रहा है। लिहाजा लोग पानी की बोटल खरीद कर अपनी प्यास बुझा रहे हैं। सीएस कार्यालय के सामने लगी चापाकल चिलचिलाती धूप में मरीजों,उनके परिजनों समेत अन्य लोगों के लिए राहत दे रहा था,पर पिछले कुछ दिनों से खराब है। इस ओर विभागीय पदाधिकारी का ध्यान नहीं जा रहा है। इसके अलावा सदर हॉस्पिटल के मुख्य द्वार के पास वाटर एटीएम पिछले कई साल से खराब पड़ा है। इसके चालू होने पर लोगों को कम कीमत में ठंडा पानी सहज मिल जाता था।

सिमडेगा-रांची मार्ग पर फिकपानी के पास ट्रेलर-स्कूटी में भिड़त, 1 की मौत



नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा कोलेबिरा मुख्य मार्ग फिकपानी जंगल में शनिवार की सुबह ट्रेलर मालवाहक एवं स्कूटी में सीधी टक्कर हो गई टक्कर इतनी जोरदार थी की स्कूटी सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया।घायल को इलाज के लिए सिमडेगा सदर अस्पताल में भर्ती कराया है।घटना के संबंध में बताया गया कि बोलबा कि समसेरा कुसुमटोली गांव निवासी अजय केरकेट्टा अपने आप बेटा आदर्श



करने के बाद भी कार्य रुका नहीं। मौके पर दिलीप ने तुरंत अनुमंडल अधिकारी से फोन पर बात कर मामले की जानकारी देते हुए आग्रह किया कि स्थल को जांच कर कार्य बंद कराया जाय। साथ ही आवेदन बनाकर सभों के

हस्ताक्षर कर अनुमंडल में जमा भी किए गए। जिसमे भी कहा गया है कि सरकारी भूमि का बोर्ड भी अंचल द्वारा लगा दिया जाय ताकि भविष्य में किसी की ऐसी हिम्मत न हो। और तिकी ने कहा कि गांव को ऐसे ही एकजुट कर के रहें

ताकि कोई भी इस तरह की मनमानी न कर सके। मौके पर पूर्व वार्ड पार्षद फिलग्रिम, विजय, ग्रेगोरी तिकी, सरिता लकड़ा, सुनीता टेटे ,बिनोद कछप, मिखाएल, विजय खेस सहित अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

भवन निर्माण में मजदूरों को मिल रही है कम मजदूरी, श्रमिक नेता ने किया निरीक्षण

घटिया सामग्री से ठेकेदार चला रहे हैं काम मजदूरों का आज भी बकाया है मजदूरी

राजेश सिंह ने कहा आज भी बकाया है मजदूरों की मजदूरी ठेकेदार नहीं कर रहे हैं भुगतान

नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा झारखण्ड मजदूर यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार सिंह ने सिमडेगा जिला के अंतर्गत पाकरटांड प्रखंड के रामरेखा में बन रहे सरकारी भवन का निरक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में पाया कि कार्यस्थल पर सरकारी दर से कम मजदूरों को मजदूरी दिया जा रहा है मजदूर नेता राजेश कुमार सिंह ने कहा की विभागीय एवं ठेकेदार के मिलीभगत से मजदूरों का शोषण



जारी है। श्री सिंह ने कहा कि रामरेखा मोड़ पर गार्डवाल बन रहा है, वहां पर मजदूरों को कम मजदूरी दिया जा रहा है एवं घटिया सामग्री, मसाला एवं मरा हुआ पत्थर ढोका देकर बनाया गया है। श्री सिंह ने कहा कि रेंगावीह, कोनबेगी, चिरोटोली में रोड आरईओ विभाग

द्वारा बनाया जा रहा है जिसका ठेकेदार अक्षय कुमार सिंह है। वहां कार्य में गुणवत्ता नहीं है। वहां पर पुल गार्डवाल में मजदूरों को 250 रु के दर से मजदूरी का भुगतान किया जा रहा है। श्री सिंह ने कहा कि मजदूरों का ठेकेदार के द्वारा आज भी मजदूरी बकाया है जो

सलीमा टेटे के गांव पहुंची मिशन बदलाव की टीम, समस्याओं से हुई अवगत



नवीन मेल संवाददाता। सिमडेगा मिशन बदलाव की टीम सिमडेगा जिले के सदर प्रखंड के बड़किछपर गांव पहुंची और भारतीय महिला हॉकी टीम की बनी नई कप्तान सलीमा टेटे जो सिमडेगा की है, उनके घर जाकर उनके अभिभावक से मिलकर उनके और वहां के ग्रामीणों की समस्या के बारे में अवगत हुए और ग्रामीणों और उसके पिता ने बताया कि प्रशासन ने गावँ के विकास के लिये कोई सकारात्मक कदम नहीं

उठाया है विकासः का दावे करना झुठ है एवं सलिमा टेटे के माता पिता ने बताया कि गांव की समस्या तो बहुत सारी है जिसमे मुख्यत जर्जर सड़क, पीने की पानी की समस्या, सलीमा टेटे के नाम से बनाए गए हॉकी मैदान के निर्माण कार्य में गड़बड़ी और घटिया गुणवत्तापूर्ण और अनिमियतता तथा गांव में मोबाइल नेटवर्क का न होना मुख्य है।

अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी के गांव में मूलभूत सुविधाओं का अभाव

कस्तूरबा गांधी विद्यालय की छात्रा ने घर में फांसी लगाकर की आत्महत्या



नवीन मेल संवाददाता। बानो बानो प्रखंड के गिरदा ओपी थाना के दोनिया गंझुटोली गांव में कस्तूरबा गांधी विद्यालय बानो की 16 वर्षीय कुशवती कुमारी नामक छात्रा ने अपने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना शुक्रवार रात का बताया जा रहा है। घटना के संबंध पुलिस ने बताया कि दोनिया निवासी को मृतक छात्रा कास्तूरबा गांधी अवासीय विद्यालय बानो में वर्ग 10 में पढ़ती थी तथा गर्मी की छुट्टी में घर आई थी,शुक्रवार शाम को पुराने घर में जाकर प्लास्टिक रस्सी के सहारे फांसी लगा ली। उन्होंने बताया परिवार वालों ने शाम को घर में नहीं रहने पर? खोजबीन किया

प्रचार अभियान के आखिरी दिन बरकट्टा व बगोदर विधानसभा क्षेत्र में किया जनसंपर्क

कोडरमा। केंद्रीय मंत्री और कोडरमा संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी अननपूर्णा देवी ने शनिवार को प्रचार अभियान के आखिरी दिन चंदवारा प्रखंड के कांको, जयनगर प्रखंड के डंडाडीह, चलकुशा प्रखंड के खरगु,चौबे, अलगडीहा, बेडमकी, बगोदर विधानसभा क्षेत्र के ओरा,सरिया में जनसंपर्क किया। इस दौरान अननपूर्णा देवी ने कहा कि कोडरमा लोकसभा क्षेत्र शांतिप्रिय और विकास पसंद करने वाला इलाका है। अराजक तत्वों को यहां कभी भी स्वीकार्यता नहीं मिली है। साल 2024 के चुनाव में भी यहां के लोग झंडों, डंडों और गुंडों की राजनीति को किसी कीमत पर स्वीकार नहीं करेंगे। कोडरमा यह भी मंजूर नहीं करेगा कि उनका प्रतिनिधि उनका समर्थन करता हो, जो लगातार झारखंड को बेचते रहे और अब सेना, आदिवासियों की जमीन हड़पने के आरोप में जेल में बंद हो, जो कांग्रेसी राज्यसभा सांसद या प्रदेश के मंत्री के पीएस के नौकर के घर से नोटों की बरामदगी के बाद भी कुछ बोल नहीं पाता हो।

न्यूज बॉक्स

छत पर 11000 वोल्ट के करंट की चपेट में आकर किशोरी झुलसी, रिम्स रेफर

सिमडेगा। सिमडेगा शहरी क्षेत्र के घोचोटोली में शनिवार की सुबह छत ऊपर से गुजर रही 11000 वोल्ट करंट तार की चपेट में आने से प्रिया लकड़ा नामक 14 वर्षीय किशोरी झुलसकर गंभीर रूप से घायल हो गई परिवार वालों ने तत्काल उसे इलाज के लिए सिमडेगा सदर अस्पताल लाया गया जहां से बेहतर इलाज के लिए उसे राजधानी रांची रिम्स ले गए। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार शनिवार की सुबह प्रिया किसी काम को लेकर छत पर गई थी, इसी दौरान अचानक 11000 बोर्ड करंट को उसके छत से गुजर रही थी उसके संपर्क में आ गई और पूरी तरह से झुलस गई बताया जा रहा है की करंट लगने की वजह से उसके गले हाथ पैर सहित कहीं हिस्सों में चोट आई है। वहीं पर जिन्होंने बिजली विभाग के कार्यशाली पर आरोप लगाते हुए कहा कि विभाग को कई बार घर के ऊपर से गुजरे तार को हटाने के लिए आवेदन दिया गया ,लेकिन विभाग द्वारा नहीं सुना गया और जिसकी वजह से यह घटना घटी। उन्होंने कहा कि अगर समय रहते विभाग द्वारा तार को हटा लिया जाता है ,तो आज यह घटना नहीं घटती वहीं बिजली विभाग के प्रति आसपास के लोगों ने भी नाराजगी व्यक्त की है।

स्नातक प्रथम वर्ष की नामांकन प्रक्रिया हुई शुरू

सिमडेगा। रांची विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक कला, विज्ञान और वाणिज्य में प्रथम वर्ष में नामांकन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। नामांकन के लिए चांसलर पोर्टल के माध्यम से अप्लाई करना आवश्यक है। जानकारी देते प्राचार्य डॉ रामकुमार प्रसाद ने बताया कि सिमडेगा महाविद्यालय में नामांकन लेने के इच्छुक विद्यार्थी महाविद्यालय में स्थित कॉमन सर्विस सेंटर में आकर स्नातक कला, विज्ञान और वाणिज्य संकाय में स्नातक सत्र आपना आवेदन जमा कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि सत्र 2024/26 में नामांकन के इच्छुक छात्र छात्राओं के लिए अपना आवेदन जमा करने के लिए चांसलर पोर्टल 10 मई से खोल दिया गया है और यह 30 मई तक खुला रहेगा। उन्होंने बताया कि आवेदन जमा करने के पश्चात चार जुन को चयन सूची जारी की जाएगी। उन्होंने बताया कि अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र छात्राओं के लिए चार सौ रुपए और सामान्य वर्ग के छात्र छात्राओं के लिए पांच सौ रुपए शुल्क निर्धारित है। प्राचार्य ने बताया कि सिमडेगा महाविद्यालय में कला में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मानव विज्ञान, मनो विज्ञान सहित क्षेत्रीय भाषा में मुंडारी, नागपुरी, खड़िया आदि विषयों में ऑनर्स के पढ़ाई की सुविधा है। वहीं विज्ञान की पढ़ाई के इच्छुक विद्यार्थी भौतिकी, रसायन विज्ञान, जनुु विज्ञान और वनस्पति विज्ञान विषयों में ऑनर्स के लिए अपना आवेदन जमा कर सकते हैं। वहीं वाणिज्य संकाय में भी ऑनर्स की पढ़ाई की व्यवस्था है।

ढेंगुरपानी गांव में धूमधाम से मनाया गया जतरा पर्व



जलडेगा। प्रखण्ड के राजस्व ग्राम ढेंगुरपानी बागो टोली में बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया जतरा पर्व। यह जतरा पर्व भारत देश के आदिवासी मुंडा समाज के इतिहास से जुड़ा हुआ है। जतरा पर्व अब जगह जगह पर लुप्त होते जा रहा है। इसी को बरकरार रखने के लिए परबा परगना के हटुबदा बागो टोली गांव में पड़हा राजाओं के द्वारा एक दिवसीय जतरा पर्व का आयोजन किया। मुंडाओं के कथनानुसार बोलनघाट (प्रवेश द्वार) पर सात भाई झड़ंडु, पालु, केसेल, सुरजा, मानु, हजिरा और सिंगरा ने भूपत नामक राक्षस को मार गिराया और हिन्दुस्तान (मुंडारी से हेन्दे दिसुम) में प्रवेश किया। उन्होंने जंगलों को काट कर रहने एवं खेती लायक भूमि दखल किया। जब घर वापस लौटे तो उनकी मां चम्पू बुढ़िया पूछी कि कितनी जमीन दखल किए हैं? उन्होंने कहा मुंडारी से जाझतरा (कुछ हिस्सा) जमीन दखल किया है। इस खुशी में एक खूंटा को चिह्न के लिए सात जगह (सातो भाई के नाम से) काटा गया और जमीन पर गाड़ दिया गया। खुशी से इसके चारों ओर नाचने गाने लगे। उसी समय से जतरा पर्व शुरू हुआ।मौके पर कॉम्प्ट मुंडा 22 पड़हा केन्द्र पकरा के महामंत्री सह मुंडा समाज प्रवक्ता लुथर तोपनो, पाहन जेम्स धनवार, परबा परगनादार बिरेन्द्र जोजो, राजा कुंवार तोपनो, विलियम तोपनो, मुलिया बेडिंग, रेमिश समद, प्रवीन लुगुन के अलावा अन्य राजाओं के साथ भारी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

राधा गोविंद विवि के प्रो एम रजीउद्दीन को नम आंखों से दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि



रामगढ़। राधा गोविंद विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. (डॉ.) एम. रजीउद्दीन प्रातः 7 बजे पैतृक गांव सालिमपुर, भागलपुर में लंबी बीमारी उपरांत अंतिम सांस ली। उनके निधन पर 18 मई को विश्वविद्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया और उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्रो.एम.रजीउद्दीन एक उच्चकोटि के शिक्षाविद थे। जिन्होंने अपना कार्यकाल शिक्षा, अनुसंधान और सामाजिक जुड़ाव को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित किया। उनके मार्गदर्शन में राधा गोविंद विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय वृद्धि और विकास देखा।शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और छात्रों को सशक्त बनाने के उनके प्रयासों को आनेवाले कई वर्षों तक याद किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी.एन. साह ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निधन से राधा गोविंद विश्वविद्यालय परिवार के साथ ही पूरे शिक्षा जगत को अपूरणीय क्षति हुई है। कुलसचिव डॉ. निर्मल कुमार मंडल ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके सरल व्यक्तित्व के कारण पूरा विश्वविद्यालय परिवार सदैव याद रखेगा।

स्वीप के तहत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक का आयोजन

कोडरमा। लोकसभा चुनाव को लेकर स्वीप कोषांग के तहत शनिवार को कोडरमा बाजार स्थित गांधी चौक के पास नुक्कड़ नाटक और मतदाता शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नोडल पदाधिकारी स्वीप कोषांग सह जिला समाज कल्याण पदाधिकारी शिप्रा सिन्हा के नेतृत्व में कार्यक्रम हुआ। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि मतदाता जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

आध्यात्म

आरिफ मोहम्मद की अयोध्या यात्रा

अयोध्या धाम के भव्य श्रीराम मंदिर में दर्शनार्थियों की संख्या कम नहीं हो रही है। मंदिर लोकार्पण के बाद से यह सिलसिला अनवरत जारी है। यहां प्रतिदिन लघु भारत के भी दर्शन होते हैं। भाषा अलग है। लेकिन श्रद्धा भाव समान है। धीधुर गर्मी में भी किसी का उत्साह कम नहीं है। अयोध्या की सड़कें, मंदिर सभी जगह श्रीराम की जय जयकार गूंजती रहती है। एक-दूसरे की जो भाषा भी जो नहीं समझते वह भी जय श्रीराम से परस्पर अभिवादन करते हैं। श्रीराम लला के दर्शन कर लोग भावविह्वल होते है। दर्शनार्थियों के इस हुजूम में केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान भी शामिल हैं। उन्होंने श्रीराम लला के दर्शन किए। मत्था टेका। अयोध्या का पड़ोसी जिला बहराइच आरिफ मोहम्मद खान का चुनावी क्षेत्र रहा है। आरिफ मोहम्मद खान ने न केवल रामलला को जीभर के निहारा बल्कि उन्होंने रामलला के दरबार में उन्हें लेटकर प्रणाम किया और उनके प्रति अपनी भावना समर्पित की। उन्होंने सामाजिक सौहार्द का एक बड़ा संदेश दिया। आरिफ मोहम्मद अपने राष्ट्रवादी विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं। वह उर्दू, फारसी, हिंदी संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के जानकार हैं। बहुत अध्ययनशील हैं। अपने संबोधन में वह वेद पुराण उपनिषदों का उद्धरण देते हैं। भारतीय संस्कृति की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं। कहते हैं कि यह भारत है जिसने ज्ञान और उसके प्रसार का मानवीय चिंतन दुनिया को दिया। सूर्य सिद्धांत यूरोपीय पुनर्जागरण का आधार है। नौवीं शताब्दी में भारतीय सूर्य सिद्धांत ग्रंथ को लेकर भारतीय मनीषी अरब गए थे। बगदाद के सुल्तान ने उसका अनुवाद कराया। इसके बाद यह ग्रंथ स्पेन के राजा ने मंगवाया। उसका अनुवाद वहां हुआ। यूरोपीय पुनर्जागरण इसी भारतीय सिद्धांत पर आधारित है। उपनिषद कहते हैं ज्ञान प्राप्त करो फिर उसको साझा करो। कपिल मुनि ने ज्ञान प्राप्त किया। फिर उसे अपनी मां को सुनाया। यह प्रसार की ही ललक थी। भारतीय चिंतन में सेवा सहायता पूजा की भाँति है। इसमें भेदभाव नहीं है। इस भारतीय विरासत पर अमल तय हो जाए तो सभी कार्य अपने आप होते चलेंगे। भारतीय ज्ञान का सारांश गीता में है। भारत में ज्ञान की पूजा हुई। इस मार्ग से भटके तभी भारत परतंत्र हुआ। ज्ञान का प्रसार बंद कर दिया। इसलिए गुलाम हुए। जो ज्ञान को साझा नहीं करता वह सरस्वती का उपासक नहीं खलनायक होता है। महामाना मालवीय ने इसी चेतना का जागरण किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इसका एक निमित्त या पड़ाव मात्र है। भारतीय संस्कृति का जागरण हो रहा है। ज्ञान की तरह पवित्र करने वाला कुछ नहीं है। ब्रह्मचारी वह है जो विद्यार्थी है। जिसमें जिज्ञासा है। विज्ञान का महत्व है। विज्ञान प्रकृति पर नियन्त्रण का प्रयास करता है। ज्ञान ब्रह्म की ओर ले जाता है। एकता का आधार आत्मा है। मनुष्य ही नहीं जीव-जन्तु सभी में आत्मा है। इसलिए भेदभाव नहीं होना चाहिए। आरिफ मोहमद जनवरी में मणिराम दास छावनी में हुए अयोध्या उत्सव में सहभागी हुए थे। उसमें उन्होंने कहा था कि राम मंदिर के निर्माण से पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है। उस खुशी में हिस्सा लेने के लिए आया हूं। श्रीराम का जीवन हमें सच्चाई पर चलने की प्रेरणा देता है। भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण में उत्तर भारत से काफी पहले हो गई थी। आंदोलन में श्रीराम को अवतार के रूप में देखा गया है। सबसे राम सबके राम यह वास्तविकता नजर आती है। आरिफ मोहम्मद खान की भगवान राम पर आस्था किसी से छुपी नहीं है। वह अक्सर कहते हैं कि आज भी अगर आप ग्रामीण इलाकों में चले जाएं तो लोग एक दूसरे से राम-राम कहते हैं। यहाँ तक कि जब झगड़ा हो जाता है तो लोग कहते हैं कि राम-राम करो, झगड़ा मत करो। ऐसा कोई नहीं है जिसके दिल में राम न हों। मुसलमान के दिल में भी राम हैं। हम ऐसे देश में रहते हैं जहां कि संस्कृति ये नहीं कहती है कि हम दूसरों पर हमला करें। भगवान राम भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। राम के व्यक्तित्व की विशेषता यह है कि वह हर युग के महानायक हैं।

(**ये लेखक के निजी विचार हैं।**)

रविवासरीय

आदिवासी जनजीवन के नये जन्म का उजाला

सुखी परिवार अभियान के प्रणेता, आदिवासी जनजीवन के मसीहा एवं प्रख्यात जैन संत गणि राजेन्द्र विजय पिछले 36 वर्षों से आदिवासी विषयों एवं मुद्दों को लेकर सक्रिय है, उन्होंने आदिवासी जनजीवन के उन्नयन एवं विकास के लिये अनेक जनकल्याणकारी गतिविधियों-योजनाओं जिनमें शिक्षा, सेवा, चिकित्सा एवं आर्थिक उन्नयन के उपक्रम किये हैं, जो आदिवासी जन-जीवन में उतरती रोशनी है। हाल ही में गुजरात में 4400 करोड़ की परियोजनाओं का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऑनलाइन क्वांट की आदिवासी महिलाओं से बातचीत करते हुए गणि राजेन्द्र विजय को जिस स्नेह एवं आत्मीयता से याद किया, समूचे देश ने यह परिस्थ देखा और उनकी सेवाओं को महसूस किया। मोदी का इस तरह इस संत पुरुष को याद करना,उनके गौरव को, उनके होने का भान कराता हैं। इस वर्ष गणि राजेन्द्र विजयजी अपने जन्म दिन 19 मई, 2024 को गुजरात के आदिवासी क्षेत्र कवांट में देश के पहले कौशल विकास विश्वविद्यालय ‘भगवान आदिनाथ आदिवासी कौशल विश्वविद्यालय’ के बीच को आकार देने को तत्पर हो रहे हैं, जिससे भारत के कौशल का दुनिया में डंका बजेगा एवं आदिवासी जनजीवन विकास की एक नई गाथा लिखने को तत्पर हो निश्चित ही गणि राजेन्द्र विजयजी आदिवासी समाज को उचित



ललित गर्ग

आदिवासी जनजीवन की आर्थिक उन्नति एवं स्वावलम्बन के लिये वे सुखी परिवार ग्रामोद्योग भी संचालित कर रहे हैं। अपने इन्हीं व्यापक उपक्रमों की सफलता के लिये वे कठोर साधना करते हैं और अपने शरीर को तपाते हैं। अपने कार्यक्रमों में वे आदिवासी के साथ-साथ आम लोगों में शिक्षा के साथ-साथ नशा मुक्ति एवं रुढ़ि उन्मूलन की अलख जगाते हैं। उनके प्रयत्नों का उद्देश्य है शिक्षा एवं पढ़ने की रुचि जागृत करने के साथ-साथ आदिवासी जनजीवन के मन में अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना है।

दजाँ दिलाने एवं उनकी समस्याओं के समाधान के लिये तत्पर है। वे स्वयं समर्थ एवं समृद्ध है, अतः शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिये स्वयं आगे आएँ। एक तरह से एक संतपुरुष के प्रयत्नों से एक सम्पूर्ण पिछड़ा एवं उपेक्षित आदिवासी समाज स्वयं को आदर्श रूप में निर्मित करने के लिये तत्पर हो रहा है। यह एक अनुरकणीय एवं सराहनीय प्रयास है। लेकिन इन आदिवासी लोगों को राजनीतिक संरक्षक भी मिले, इसके लिये वे सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से सम्पर्क स्थापित कर आदिवासी जीवन के दर्द से उन्हें अवगत कराया एवं इस

आध्यात्मिक विकास और नैतिक उत्थान के प्रयत्न में तपकर और अधिक निखरा है। वे आदिवासी जनजीवन के उत्थान और उन्नयन के लिये लम्बे समय से प्रयासरत हैं और विशेषतः आदिवासी जनजीवन में शिक्षा की योजनाओं को लेकर जागरूक है, इसके लिये सर्वसुविधयुक्त करीब 12 करोड की लागत से एकलव्य आवासीय माडल विद्यालय का निर्माण होकर धिगत दो दशकों से शिक्षा की नई उपलब्धियां एवं कीर्तिमान उनके प्रयत्नों से स्थापित कर रहा है। वर्ष 2007 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस विद्यालय एवं अन्य

चिंताजनक है मुद्दाविहीन लोकसभा चुनाव



अरुण कुमार वैदिक

तो यह उसका अधिकार है। विपक्ष के पास सत्ता दल को घेरने के लिए मुद्दे होने चाहिए। इस लोकसभा चुनाव में विपक्ष किसी भी समस्या को मुद्दा नहीं बना पाया। सच तो यह है कि कोई भी सरकार अपने कार्यों से बोलती है और विपक्ष माइक से बोलता है। पूरे पांच साल विपक्ष मुद्दा आधारित लोकहित के विचार सदन के भीतर और बाहर नहीं रख पाया। न ही आंदोलन से अपने पक्ष में वातावरण बना पाया। जनहित की बातों और समस्याओं को लेकर लोकसभा में सकारात्मक चर्चा भी ठीक नहीं रही। राष्ट्रीय बिंदुओं पर जहां विपक्ष भागता रहा, वहीं इसका लाभ सत्ता दल को लगातार मिलता देखा गया। प्रायः सत्तादल की किसी छोट्टी सी बात या टिप्पणी पर विपक्ष भ्रमित होता देखा गया। जनहित पर चर्चा लोकसभा और विधान मंडल के सदनों में नहीं होने से सामाजिक और राजनीतिक कार्यकताओं में निराशा होती है। सत्ता दल को इसका लाभ मिलता है। राष्ट्र का नुकसान होता है। खास बात यह भी है, कि सदन के भीतर माननीय सदस्यों को मर्यादित रहने, सदन को सुव्यवस्थित चलाने , संसदीय व्यवस्था के अनुसार आचरण करने के प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं। सत्र के एक-दो दिन पूर्व सर्वदलीय बैठक और साथ में सत्ता दल द्वारा सदन के सभी दलों के नेताओं के साथ बैठक का आयोजन भी किया जाता है। मगर सदन के पहले दिन ही हंगामा शुरू हो जाता है। सदन चलाने में मोटी धनराशि

खर्च होती है। अपने नेता के प्रति वफादारी दिखाने का अवसर सदन में मिलता है। वह इस स्वर्णिम अवसर को खोना नहीं चाहते हैं। चुनाव में जनमानस इस बात का मूल्यांकन करता है उसके क्षेत्र के सांसद और विधान ने सदन में नए कानून पर कितनी चर्चा की। क्या कोई ऐसे सुझाव दिए जो राष्ट्र निर्माण के लिए सुंदर हैं। क्या शिक्षा को लेकर कोई विषय रखा? क्या सदन में पर्यावरण की चिंता की? नदियों में प्रदूषण को घटाने पर कोई उपयोगी सुझाव दिए। क्या इस पर चर्चा हुई कि किसानों की फसल का अधिकतम लाभ मिले। इस पर कितने सांसदों और विधायकों की राय आई। प्रश्न प्रति प्रश्न हुए। सरकार का प्रश्नों में क्या रुख रहा। विधान परिषद सदस्य स्नातक क्षेत्र के भी होते हैं। तो भी स्नातकों की बात क्यों नहीं होती है। सदस्यों ने सदन के भीतर यह जरूर बताया होगा कि किसान के बेटे हैं। गांव से आए हैं। भारत गांव में ही है। बेरोजगारी को लेकर सांसदों- विधायकों की राय सामने नहीं आती है। न ही लोकसभा में न विधानसभा में । आखिर यह विषय आते क्यों नहीं। विपक्ष बोलता नहीं। सत्ता दल मौन होता है, जबकि शक्तियों की बात की जाए तो विधायक, एमएलसी, लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य चाहे वे सत्ता दल के हों या हो या विपक्ष के, समान शक्तियों से लैस हैं। मगर वह प्रायः नहीं बोलते। उनके अंदर प्रश्न नहीं उठते। सदन के भीतर अपने क्षेत्र की उपेक्षा करते हैं। वह प्रश्नांकुल नहीं होते हैं। वह उनके लिए भी विचलित नहीं होते जिनके वोट से पदासीन होते हैं। उपनिषदों में एक उपनिषद है-प्रश्नोपनिषद , वह उससे भी प्रेरित नहीं होते। वह किसी सरकारी अस्पताल में चिकित्सक की कमी को भी देखकर सदनों में यह समस्या नहीं रखते हैं। बात चिकित्सा, शिक्षा या नई ट्रेन चलवाने की बस चलवाने, नदियों ,पहाड़ों को बचाने की नहीं है। मूलभूत प्रश्न है संसद, विधानमंडल में जब गांव-गरीब, मजदूर-बेरोजगारी, दवा ,अपराध ,न्याय की चर्चा में भागीदारी नहीं होगी तो

उपाय क्या है? हमारे अधिकार क्या हैं। बहुसंख्यक आबादी नहीं जानती कि उनके संवैधानिक अधिकार क्या हैं? आज भी प्राय : लोग मानते हैं कि सांसद या विधायक पुलिस-तहसील में सिफारिश करने के लिए उपयुक्त है। यह काम जनप्रतिनिधियों से कराया जाए। मगर लोकसभा में जब कोई विधेयक लाया जा रहा हो तब सांसदों की क्या भूमिका होती है? देश की जनता प्रायः नहीं जानती है। संसद और विधान मंडल की कार्यवाही में जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी क्या है? इसे लेकर शिक्षित और प्रबुद्ध समाज भी गंभीर नहीं है। जब बेरोजगारी पर बात होती है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं के बजट पर चर्चा होती है तो किसानों, मजदूरों और डिग्री धारकों के भविष्य पर चर्चा भी होनी चाहिए, ऐसे में जनप्रतिनिधियों की चुप्पी तो चौंकाती ही है। डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक ‘हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका के पेज 85 अध्याय भारतेंदु युगीन पत्रकारिता का परिप्रेक्ष्य में लिखा है कि आधुनिक युग में संस्कृत और राजनीतिक नाभिनालइय है जो लोग संस्कृति और राजनीति में संबंध नहीं देखते। वे समाज के प्रति समग्र दृष्टिकोण पैदा भी नहीं कर सकते। इन दिनों परिवारवाद बड़ा मुद्दा है। जातिवाद उन्मूलन बड़ा मुद्दा नहीं है। भ्रष्टाचार मुद्दा नहीं है, यह विषय गंभीर है। इस पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए। मतदाताओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत रहना होगा। डॉ. ओमप्रकाश गाबा की पुस्तक ‘राजनीति चिंतन की रूपरेखा’ के पेज 163 पर जर्मन दार्शनिक कान्ट ने नैतिकता को सर्वोपरि स्थान देते हुए कहा कि राजनीतिज्ञों को नैतिकता के सामने सदैव नतमस्तक रहना चाहिए। सच्ची राजनीति तब तक एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती जब तक वह नैतिक आदर्शों को प्रणाम न कर लें। अपेक्षा की जा सकती है कि नई लोकसभा के साथ नई ऊर्जा तथा समाज राष्ट्र के हितों के लिए काम करेंगे।

(**लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।**)

आपातकाल की संवैधानिक त्रासदी पुर्नपाठ जरूरी

गांव-गली में शोर है-कौवा कान ले गया।

किसी ने नहीं देखा। इसने उसे कहा। उसने अगले से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चुनाव में भारी बहुमत पाकर संविधान बदल देंगे। मूलभूत प्रश्न है कि क्या कोई सरकार संविधान समाप्त कर सकती है? क्या कोई सरकार बिना संविधान के ही शासन की संस्थाओं, न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका का संचालन कर सकती है? क्या कोई सरकार संविधान के आधारिक लक्षणों-बेसिक फ्रीचर्स का संशोधन या निरसन कर सकती है? 2 सारे प्रश्नों का उत्तर है-नहीं। कौवा कान ले गया लेकिन कान अपनी जगह ही है। कौवा कांव-कांव कर रहा है। झूठ-मूठ। बचपन में कथा सुनी थी। एक बारत के सारे लोग भाग रहे थे। एक ने दूसरे से पूछा-आप क्यों भाग रहे हैं? दूसरे ने कहा-आप भी भाग रहे हैं? अगले ने कहा-मुझे क्या पता? सब भाग रहे हैं। सो हम भी भाग रहे हैं। बहुत खोज करने पर पता चला कि एक व्यक्ति की मोटरसाइकिल की चाभी खो गई थी। वह तेज रफ्तार दौड़कर चाभी खोजने गया था। बाकी लोग देखा-देखी अकारण भाग रहे थे। संविधान खाले की बहस व्यर्थ है। संविधान साधारण अभिलेख नहीं है। यह राष्ट्र का राजधर्म है। आवश्यकतानुसार संविधान में संशोधन होते रहते हैं। लगभग 105 संशोधन हो चुके हैं। संविधान में ही संविधान संशोधन के प्रावधान हैं। संविधान बदलने और संशोधन करने में मूलभूत अंतर है। संविधान संशोधन विषयक प्रावधान (अनुच्छेद 368-मसौदा संविधान

अनुच्छेद 304) पर संविधान सभा में बहस चली थी। एच. वी. कामथ ने कहा था, ‘‘संशोधन आखिरकार क्या है? संशोधन का अर्थ हो सकता है संविधान में कुछ परिवर्तन। उसमें कुछ जोड़ना या उसका निरसन।’’ लेकिन चुनाव में संविधान संशोधन को लेकर कोई बहस नहीं है। संविधान खत्म करने की बयानबाजी हास्यास्पद है। संविधान सभा में पी. एस. देशमुख ने कहा था, ‘‘भविष्य में कुछ समय तक संविधान में तमाम परिवर्तन करने आवश्यक होंगे। इसलिए संविधान संशोधन आसान बनाना जरूरी है।’’ सभा में अनेक सदस्यों ने विचार व्यक्त किए। डॉ. आम्बेडकर ने कहा, ‘‘आर्यश्रि संविधान में, दोनों सदन सामान्य बहुमत से संविधान के किसी भाग को संशोधित कर सकते हैं। शर्त है कि सदनों के विनिश्चय को जनता का बहुमत अनुमोदित करे। स्विस संविधान में भी विधानमंडल संशोधन विधेयक पारित कर सकता है। लेकिन जनता के अनुसमर्थन की आवश्यकता है।’’ उन्होंने अनेक उदाहरण दिए। भारत में संशोधन की शक्ति विधायिका में निहित है। उन्होंने सभा में विचाराधीन विधेयक का विवेचन किया, ‘‘हम संविधान संशोधन को तीन श्रेणियां में बाँटें हैं। एक श्रेणी में संसद का साधारण बहुमत पर्याप्त है। दूसरी श्रेणी के संशोधन में दो तिहाई बहुमत आवश्यक है। तीसरी श्रेणी में देश की आंघे से अधिक विधानसभाओं का समर्थन आवश्यक है।’’ यहां संशोधन की पूरी प्रक्रिया औचित्यपूर्ण है। संविधान सभा में संशोधन प्रक्रिया को सरल बनाने की मांग थी कि आमजन राजनैतिक प्रणाली को बदलने की मांग कर सकते हैं। जन असंतोष

प्रकट करने का कोई मार्ग भी होना चाहिए। डॉक्टर आम्बेडकर ने कहा, ‘‘जो संविधान से असंतुष्ट हैं उन्हें दो तिहाई बहुमत प्राप्त करना होगा। यदि वह व्यस्क मत के आधार पर निर्वाचित संसद में दो तिहाई बहुमत भी नहीं पा सकते तो यह मान लेना चाहिए संविधान के प्रति असंतोष में जनता उनके साथ नहीं है।’’ उच्चतम न्यायालय ने स्थापना दी थी कि हमारे संविधान का कोई भाग ऐसा नहीं है जिसका संशोधन नहीं हो सकता। गोलकनाथ के चर्चित मुकदमे में 11 जजों की विशेष न्यायपीठ ने 6 न्यायाधीशों के बहुमत से पूर्व विनिश्चय को उलट दिया था और कहा था ‘‘यद्यपि अनुच्छेद 368 में कोई अलग अपवाद नहीं है। लेकिन मूल अधिकारों की प्रवृति ही ऐसी है कि वह नहीं हो सकते। यदि ऐसे किसी अधिकार का संशोधन करना तो नई संविधान सभा बुलानी पड़ेगी।’’ फिर केशवानंद वाद का चर्चित फैसला आया। गोलकनाथ के वाद के समय से ही प्रश्न उठाया जा रहा था कि, ‘‘क्या मौलिक अधिकारों (भाग-3) के बाहर भी संविधान का कोई उपबंध है जो संशोधन की प्रक्रिया से मुक्त है?’’ केशवानंद के मुकदमे में बहुमत ने गोलकनाथ के मत को उलट दिया कि अनुच्छेद 368 के अधीन मूल अधिकारों का संशोधन नहीं हो सकता। एक अन्य बड़ी बात भी न्यायालय ने कही है कि संविधान के कुछ आधारिक लक्षण हैं जिनका संशोधन नहीं किया जा सकता। यदि संविधान संशोधन अधिनियम संविधान का आधारिक संरचना में परिवर्तन के लिए है तो न्यायालय उसे शक्तिवाहक के आधार पर शून्य घोषित करने का अधिकारी होगा। न्यायालय

ने भारत की सम्प्रभुता, अखंडता, परिसंघीय प्रणाली, न्यायायिक पुर्नविलोकन, संसदीय प्रणाली आदि अनेक विषयों को संविधान के आधारिक लक्षण बताए। दरअसल चुनाव के मूलभूत मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए इंडी गठबंधन संविधान खत्म करने की निराधार कल्पना दोहरा रहा है। संविधान में आपातकाल के लिए देश की आतंरिक अशांति को आधार बताया गया है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ही आतंरिक अशांति से पीड़ित थीं। देश में शांति थी। लोकतांत्रिक आन्दोलन बेशक थे। उन्होंने आपातकालीन प्रावधान (अनुच्छेद 352) का दुरुपयोग किया। इंडी गठबंधन को आपातकाल 1975-77 के समय पारित 42वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 का अध्ययन करना चाहिए। 42वें संशोधन के माध्यम से संविधान के 53 अनुच्छेद एक साथ बदले गए। सातवीं अनुसूची में भी परिवर्तन किए गए। महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को बदल दिया गया। संविधान के किसी उपबंध को उल्लंघन करने के आधार पर उसकी संवैधानिकता को चुनौती देने के लिए संघ और राज्य के कानून में भेद किया गया। यह उपबंध किया गया कि कोई उच्च न्यायालय किसी केन्द्रीय विधि या जिसमें ऐसी विधि के अंतर्गत अधीनस्थ विधान भी सम्मिलित हैं, संविधान विरुद्ध होने के आधार पर अविधि मान्य नहीं कर सकेगा। 42वां संशोधन न्यायपालिका की शक्ति को घटाने वाला था और मौलिक अधिकारों की भी। उच्चतम न्यायालय अपनी अधिकारिता (अनुच्छेद 32) में किसी राज्य विधि को असंवैधानिक घोषित नहीं करेगा। संविधान संशोधन अधिनियमों के न्यायायिक

पुर्नविलोकन के अधिकार का भी संशोधन हुआ। उपबंध किया गया कि जिस विधि को संविधान संशोधन विधि बताया जाएगा, उसे न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। नीति निर्देशक तत्व (अनुच्छेद 37) किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं है। लेकिन उपबंध किया गया कि किसी निर्देशक तत्व को क्रियान्वित करने वाली विधि को मूल अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर न्यायायिक पुर्नविलोकन से मुक्त रखा जाएगा। यह मूल संविधान के ठीक उल्टा है। संविधान को तहस-नहस करने का यह प्रयास निन्दनीय है। इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने संविधान और उसकी आत्मा को ही कुचल दिया था। 1977 के आम चुनाव में जनता पार्टी की सरकार आई। नई सरकार ने 43वें संविधान संशोधन अधिनियम के माध्यम से न्यायायिक पुर्नविलोकन के न्यायपालिका के अधिकार की बहाली की। सभी जनविरोधी प्रावधानों को निरस्त कर दिया गया। भारतीय संविधान के इतिहास में संविधान के साथ छेड़खानी का निन्दनीय कृत्य दूसरा नहीं मिलता। संविधान के प्रति भारतीय जन गण मन की निष्ठा है। संविधान बदलने या पूरा संविधान ही खारिज करने और तानाशाही लाने जैसे आरोप हास्यास्पद हैं। वे संविधान बदलने या हटाने की बात उठाकर आपातकाल की संवैधानिक त्रासदी याद दिला रहे हैं। इस दृष्टि से उनका यह कृत्य उपयोगी है। आपातकाल संवैधानिक त्रासदी है। आपातकाल की तानाशाही अत्याचार और संविधान को तहस-नहस करने के कृत्यों का पाठ और पुर्नपाठ जरूरी है।

(**लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं। ये लेखक के निजी विचार हैं।**)

योजनाओं का शुभारंभ करीब डेढ़ लाख आदिवासी लोगों के बीच किया, इतनी विशाल आदिवासी उपस्थिति गणिजी के इस क्षेत्र में प्रभाव को दर्शा रही थी। उनके नेतृत्व में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित है, जिनमें कन्या शिक्षा के लिये ब्राही सुन्दरी कन्या छात्रावास का कुशलतापूर्वक संचालन हो रहा हैं। इसी आदिवासी अंचल में जहां जीवदशा की दृष्टि से गौशाला संचालित है तो चिकित्सा और सेवा के लिये चलयमान चिकित्सालय भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रहा है। आदिवासी जनजीवन की आर्थिक उन्नति एवं स्वावलम्बन के लिये वे सुखी परिवार ग्रामोद्योग भी संचालित कर रहे हैं। अपने इन्हीं व्यापक उपक्रमों की सफलता के लिये वे कठोर साधना करते हैं और अपने शरीर को तपाते हैं। अपने कार्यक्रमों में वे आदिवासी के साथ-साथ आम लोगों में शिक्षा के साथ-साथ नशा मुक्ति एवं रुढ़ि उन्मूलन की अलख जगाते हैं। उनके प्रयत्नों का उद्देश्य है शिक्षा एवं पढ़ने की रुचि जागृत करने के साथ-साथ आदिवासी जनजीवन के मन में अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना है। हर आदमी अपने अन्दर झाँके और अपना स्वयं का निरीक्षण करे। आज मानवता इसलिए खतरे में नहीं है कि अनैतिकता बढ़ रही है। अनैतिकता सदैव रही है- कभी कम और कभी ज्यादा। सबसे खतरे वाली बात यह है कि नैतिकता के प्रति आस्था

अर्थव्यवस्था

असंगठित क्षेत्र में आधी आबादी की बड़ी हिस्सेदारी

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की अपनी समस्या है। काम मिले तो मिल गया और नहीं मिला तो नहीं मिला। यानी असंगठित क्षेत्र में रोजगार व आय की स्थिरता नहीं होती। यही कारण है कि दूसरे दिन भी काम मिलेगा या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं होती। असंगठित क्षेत्र में श्रम शक्ति की बागडोर महिलाओं ने ही संभाल रखी है। देश की आर्थिक गतिविधियों के संचालन में असंगठित क्षेत्र की अपनी भूमिका है और इसमें कोई दो राय नहीं कि असंगठित क्षेत्र में श्रम शक्ति को भले ही मेहनत का पूरा पैसा नहीं मिलता हो पर असंगठित क्षेत्र में सर्वाधिक रोजगार के अवसर हैं। बहुत बड़े वर्ग की रोजी रोटी असंगठित क्षेत्र पर ही टिकी हुई है। हालांकि असंगठित क्षेत्र की अपनी समस्याएँ हैं। इसमें रोजगार की सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, नियमित आय का ना होना, स्वास्थ्य सुरक्षा सहित बहुत सी समस्याओं से दो चार होना पड़ता है। हालांकि सरकार असंगठित क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण के लिए समय समय पर योजनाएँ लाती है और ई-श्रम पोर्टल पर पंजीयन कराकर उनकी वास्तविक संख्या व आवश्यक जानकारी जुटाते हुए योजनाओं को अंतिम रुप दिया जाता रहा है। खैर बात भले ही थोड़ी अजीब लगे पर वास्तविकता तो यही बयां करती है कि आज देश में असंगठित क्षेत्र में पुरुषों के मुकाबलें महिलाओं की हिस्सेदारी अधिक हो गई है। केन्द्र सरकार के ई-श्रम पोर्टल पर देश में 29 करोड़ 56 लाख श्रमिकों का पंजीकरण हो चुका है जिसमें से महिला श्रमिकों का संख्या महिलाओं की तुलना में अधिक है। असंगठित क्षेत्र में आज महिला श्रमिकों की हिस्सेदारी आधी से भी ज्यादा हो चुकी है। केन्द्र सरकार के ई-श्रम पोर्टल की ही बात करे तो इसमें पंजीकृत 29 करोड़ 56 लाख श्रमिकों में से 53 फीसदी से भी अधिक महिला श्रमिक रजिस्टर्ड हैं जबकि पुरुष श्रमिकों की संख्या यही कोई 46 फीसदी से कुछ ही अधिक है। दरअसल बात भले ही कुछ भी की जाती हो पर तस्वीर तो यही है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ अधिक श्रम कर रही थी और कर रही है। भले ही व्हाइट कालर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की तुलना में कम हो पर आज संघटित व असंगठित क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों से पीछे नहीं हैं। भारत सरकार के ई-श्रम पोर्टल के आंकड़ों की ही भाषा में बात करें तो केरल में सबसे अधिक 59.79 प्रतिशत महिला श्रमिक असंगठित क्षेत्र में है तो आंध्रप्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और पश्चिम बंगाल आदि सभी जगह पुरुषों की तुलना में महिला श्रमिक अधिक है। दरअसल देखा जाए तो खेती और पशुपालन तो महिलाओं के भरोसे ही चल रहा है। शहरों में घरेलू कामकाज और रियल स्टेट क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। करीब 15 करोड़ श्रमिक खेती किसानी क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। इसका अर्थ साफ साफ यह हुआ कि खेती किसानी से आधे से भी अधिक किसान जुड़े हुए हैं और इसमें भी कोई दो राय नहीं कि पुरातन काल से ही पशुपालन तो महिलाओं के भरोसे ही चलता आया है। खेती किसानी में भी महिलाओं की प्रमुख भागीदारी होती है। गली कुचें में बनिये की दुकान, चाय-पानी की स्टॉल या इसी तरह की किसी टुकान में काम करने वाले, चौकटियों में कारीलारी-बेलदारी के काम की प्रतीक्षा करने वाले, खेतों में जुताई, कटाई व इसी तरह के काम करने वाले, छोटे दस्तकारों, कारीगरों, हस्तशिल्पियों, गली मोहल्ले में घूमने वाले वेण्डर्स और अस्थायी काम करने वाले लोग असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की श्रेणी में आते हैं। डेली वेजेज के आधार पर काम करने वाले लोगों को भी इसी श्रेणी में रखा जाएगा। इनमें महिला और पुरुष श्रमिक दोनों ही शामिल है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की अपनी समस्या है। काम मिले तो मिल गया और नहीं मिला तो नहीं मिला। यानी असंगठित क्षेत्र में रोजगार व आय की स्थिरता नहीं होती। यही कारण है कि दूसरे दिन भी काम मिलेगा या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं होती।

(**ये लेखक के निजी विचार हैं।**)

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा 502, मंगलमूर्ति हार्डट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रंची से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रंची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं. **BIHNN/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकार संपादक : सुनील सिंह ‘बादल’*, समाचार संपादक : त्रिभुवन कुमार सिन्हा, प्रेस कार्यालय : रंची रोड, रेंडमा, भेदिनीनगर (डालटगंज) पत्तामू-822102, फोन नंबर : 06562-796018, रंची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हार्डट्स, रानी बगान हरमू रोड, रंची-834001, फोन नंबर : 0651-3553943, ई-मेल : **news.rnmail@gmail.com**, **article.rnmail@gmail.com** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)**





मालिवाल मारपीट मामले में भाजपा-आप ने लगाए एक दूसरे पर आरोप दुर्योधन गिरफ्तार, बचाने की कोशिश कर रहे हैं धृतराष्ट्र : शहजाद पूनावाला

एजेंसी। नई दिल्ली
भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट के मामले में बिभव कुमार की गिरफ्तारी पर कहा कि आधुनिक काल के चौराहे पर हैं दुर्योधन की भूमिका निभाने वाला व्यक्ति तो गिरफ्तार हो गया है, लेकिन आधुनिक काल का धृतराष्ट्र अभी भी मौन है, दुर्योधन को बचाने की कोशिश कर रहा है। भाजपा राष्ट्रीय मुख्यालय में मीडिया से बात करते हुए शहजाद पूनावाला ने कहा कि पहले भ्रष्टाचार, फिर दुराचार, यही आम आदमी पार्टी का व्यवहार है। उन्होंने स्वाति मालीवाल को लेकर आप नेताओं द्वारा दिए जा रहे बयानों को निंदनीय बताते हुए कहा कि मेडिकल रिपोर्ट से यह साफ-साफ पता लग रहा है कि स्वाति मालीवाल को मारा-पीटा गया है, लेकिन आम आदमी पार्टी के नेता कह रहे हैं कि स्वाति मालीवाल के

राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल की मेडिकल रिपोर्ट में उनके शरीर पर चोट के निशान पाए गए हैं। इस मामले में एम्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि स्वाति मालीवाल को 'बाएं पैर के थाई' पर 3.2 सेंटीमीटर के आकार की चोट थी और उनके 'दाहिनी आंख के नीचे दाहिने गाल' पर 2.2 सेंटीमीटर आकार की एक और चोट थी। इस मेडिकल रिपोर्ट में स्वाति मालीवाल के दिए बयान को भी दर्ज किया गया है। इसके मुताबिक 13 मई को सुबह 9:15 बजे दिल्ली के सीएम हाउस में बिभव कुमार ने उनपर हमला किया। मरीज ने कई बार थपड़ मारे जाने की शिकायत की, जिसके बाद उसे धक्का दिया गया। उसका सिर किसी कठोर वस्तु से टकराया। वह फर्श पर गिर गई और उसके बाद उसके पैर, छाती, पेट पर कई बार वार किया गया।

आज का राशिफल

- मेघ**

शुभांक
1-6-9

भयता और जीवनशैली पर ध्यान देंगे। अपनों के प्रति प्रेम और विश्वास बढ़ेगा। निजी विषयों के प्रति रुचि बढ़ाएंगे। सभी क्षेत्रों में आकर्षक प्रदर्शन करेंगे। अन्य की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे। संग्रह संरक्षण बढ़ाएंगे। लक्ष्य पर फोकस रखेंगे। शुभकार्यों की रूपरेखा बनेगी।
- वृश्च**

शुभांक
1-4-6

सृजनात्मक कार्यों से जुड़ेंगे। दोपहर बाद परिस्थितियां सकारात्मक होंगी। कार्यगति सहज बनाए रखेंगे। पूर्वार्ध में खर्च विदेश के मामलों में धैर्य दिखाएं। न्यायिक विषयों में जल्दबाजी से बचें। कामकाजी संबंध सुधरेंगे। पेशेवर सहयोगियों का साथ रहेगा। महत्वपूर्ण मामलों में सतर्क रहेंगे।
- मिथुन**

शुभांक
1-4-5

महत्वपूर्ण कार्यों को मध्याह्न तक कर लेने का प्रयास रखें। आरंभिक मामलों में तेजी रहेगी। करियर कारोबार में आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण मामलों को गति देंगे। करियर व्यापार बेहतर रहेगा। विविध स्रोतों से आय होगी। प्रबंधन प्रशासन के मामले बनेंगे। सभी के सहयोग से आगे बढ़ेंगे।
- कर्क**

शुभांक
1-2-4

कार्यक्षेत्र व्यवस्थित और उन्नति पथ पर गतिमान रहेगा। प्रशासनिक विषयों को गति देंगे। भेंटवार्ता में प्रभावशाली बने रहेंगे। समय प्रबंधन पर बल बनाए रखेंगे। कार्यों को गति देंगे। आर्थिक सौदेबाजी में सफल होंगे। क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन करेंगे। अनुकूलता का प्रतिशत बढ़त पर बना रहेगा।
- सिंह**

शुभांक
1-4

योग्यता संग भाग्य का संयोग सफलता के शिखर तक ले जा सकता है। जिम्मेदारों लोगों से भेंट होगी। पेशेवर संभावनाएं बल पाएंगी। दीर्घकालिक योजनाओं में गति आएगी। लाभ संचार पाएगा। सभी क्षेत्रों में प्रभावपूर्ण प्रदर्शन रहेगा। कार्य व्यापार को गति मिलेगी।
- कन्या**

शुभांक
1-4-5

तेजी से सकारात्मक बदलाव के संकेत हैं। दोपहर बाद से परिस्थितियों में अनुकूलन आएगा। वाणी व्यवहार में सजग रहेंगे। खानपान में सुधार रहेगा। आवश्यक कार्यों की सूची बनाएंगे। तैयारी के साथ योजनानुसार आगे बढ़ेंगे। स्मार्ट वर्किंग बनाए रखेंगे। नीति नियमों पर भरोसा रखें।
- तुला**

शुभांक
1-4-6

महत्वपूर्ण मामलों में ढिलाई न दिखाएं। दोपहर से पूर्व अधिकांश विषय पूर्ण करने का प्रयास बनाए रखें। खानपान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। स्वास्थ्यगत मामलों में सजग अच्छा करेंगे। सभी का आदर सम्मान करेंगे। साझेदारी का प्रयास बढ़ेगा। उद्योग व्यापार में प्रभावी रहेंगे।
- वृश्चिक**

शुभांक
1-6-9

समय उत्तरेतर सुधार पर बना हुआ है। महत्वपूर्ण कार्यों में गति लाएं। दोपहर से अनुकूलन का स्तर तेज होगा। कर्मठता से जगह बनाए रखने में सफल होंगे। नौकरपेशा अधिक अच्छा करेंगे। पेशेवर भेंटवार्ताएं सफल होंगी। सहकर्मियों में सामंजस्य बढ़ेगा। आर्थिक पक्ष बढ़त पर रहेगा।
- धनु**

शुभांक
1-3-6

समय अनुकूल बना हुआ है। आवश्यक विषयों में शीघ्रता बनाए रखेंगे। बौद्धिक प्रयासों में सफल रहेंगे। मित्र संबंधों में गति रहेगी। विभिन्न मामलों में सहजता रहेगी। कार्य व्यापार में प्रभाव बना रहेगा। व्यक्तिगत सफलताओं को बढ़ावा मिलेगा। विभिन्न मोर्चा पर सक्रियता बनाए रहेंगे।
- मकर**

शुभांक
4-6-8

सहज संकोच दूर होगा। बौद्धिक समझ बढ़ेगी। वाणी व्यवहार पर नियंत्रण रखेंगे। अपनों का भरोसा बनाए रखेंगे। कार्य व्यापार में सुधार आएगा। निसंकोच अगे बढ़ेंगे। वाणिज्य व्यवसाय में वृद्धि होगी। सफलता प्रतिशत बढ़ेगा। भौतिक विषयों पर ध्यान देंगे। प्रबंधन पर ध्यान देंगे।
- कुम्भ**

शुभांक
1-4-6

महत्वपूर्ण कार्यों में तेजी बनाए रखें। दोपहर बात निजी विषयों में व्यस्तता बनी रह सकती है। विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मकता रहेगी। साहस पराक्रम के अवसर बढ़ेंगे। कम दूरी की यात्रा संभव है। जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएंगे। चर्चा संवाद बनाए रखेंगे। सहकारी प्रयासों से जुड़ेंगे।
- मीन**

शुभांक
1-3-6

खुशियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण विषयों में सहज पराक्रम बनाए रखेंगे। अनुशासन से आगे बढ़ेंगे। संग्रह संरक्षण में रुचि रहेगी। मेलजोल बढ़ाएंगे। संपर्क का दायरा बढ़ा होगा। भेंटवार्ता में सहज रहेंगे। संस्कारों को बल मिलेगा। मार्गलिक कार्यों को बढ़ावा देंगे। कुल कुटुम्ब पर फोकस बढ़ाएंगे। आदर्शों का पालन करेंगे।

► **सवाल**
स्वाति मालीवाल के मामले में इंडी गठबंधन के नेता चुप क्यों हैं?
'लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ' की बात कहने वाली पियका गांधी और राहुल गांधी आज चुप क्यों हैं?
पियका चतुर्वेदी स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट की घटना पर चुप क्यों हैं?
सेलेब्रिटी फुटेज क्यों जारी कर रही आप. पूरा वीडियो रिलीज क्यों नहीं करती हैं?

बिभव का ही अपराधिक इतिहास, इन मामले में बिभव सिर्फ पपेट, असली अपराधी केजरीवाल स्वयं ?
की आदत बन चुकी है, जबकि इस मामले में स्वाति मालीवाल उनकी अपनी ही पार्टी की पुरानी नेता हैं, राज्यसभा सांसद हैं और मारपीट करने वाले और करवाने वाले भी आप से ही जुड़े हैं तो फिर वे भाजपा पर आरोप क्यों लगा रहे हैं ? कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी के बयान का हवाला देते हुए उन्होंने कांग्रेस और आप दोनों के रवैये पर भी सवाल उठाया।

राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल की मेडिकल रिपोर्ट में उनके शरीर पर चोट के निशान पाए गए हैं। इस मामले में एम्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि स्वाति मालीवाल को 'बाएं पैर के थाई' पर 3.2 सेंटीमीटर के आकार की चोट थी और उनके 'दाहिनी आंख के नीचे दाहिने गाल' पर 2.2 सेंटीमीटर आकार की एक और चोट थी। इस मेडिकल रिपोर्ट में स्वाति मालीवाल के दिए बयान को भी दर्ज किया गया है। इसके मुताबिक 13 मई को सुबह 9:15 बजे दिल्ली के सीएम हाउस में बिभव कुमार ने उनपर हमला किया। मरीज ने कई बार थपड़ मारे जाने की शिकायत की, जिसके बाद उसे धक्का दिया गया। उसका सिर किसी कठोर वस्तु से टकराया। वह फर्श पर गिर गई और उसके बाद उसके पैर, छाती, पेट पर कई बार वार किया गया।



एजेंसी। नई दिल्ली
स्वाति मालीवाल से कथित मारपीट के मामले में आम आदमी पार्टी ने सीएम आवास के सीसीटीवी फुटेज को सामने रख स्वाति मालीवाल पर आरोप लगाया है कि यह सब एक बड़ी साजिश के तहत किया जा रहा है। आपकी नेता आतिशी ने इसके पीछे फिर बीजेपी का हाथ बताया है। आतिशी ने बताया कि सीएम आवास के बाहर स्वाति मालीवाल के निकलते वक्त के वीडियो में कोई भी ऐसी बात मेल नहीं खा रही है, जो उन्होंने अपनी एफआईआर में कही हो। ना तो वह लंगड़ा कर चल रही हैं, ना कोई चोट दिखाई दे रही है और ना ही उनके कपड़े फटे हुए हैं। आप नेता आतिशी ने कहा कि इसमें पूरी तरीके से बीजेपी ने षड्यंत्र रचा है। उन्होंने बीजेपी पर आरोप लगाते हुए कहा कि वह अपनी सभी जांच एजेंसियों की मदद से नेताओं को ब्लैकमेल करती हैं

अधिकारियों को धमकाती दिख रही हैं स्वाति : सौरभ
स्वाति मालीवाल के मामले में आम आदमी पार्टी के नेता सौरभ भारद्वाज की प्रतिक्रिया भी सामने आई है। उन्होंने कहा, जब कोई महिला इस तरह के आरोप लगाती है तो लगता है कि उनकी बातों में सच्चाई होगी। हमें भी स्वाति मालीवाल के मामले में यही लगा था, लेकिन जब कल सीएम आवास के ड्राइंग रूम का वीडियो सामने आया, उसमें कुछ अलग ही दिख रहा है। वीडियो में स्वाति अधिकारियों को ही धमकाते हुए दिख रही हैं। वह जो मारपीट और कपड़े फाड़े जाने का आरोप लगा रही हैं, उस वीडियो में ऐसा कुछ नहीं दिख रहा। वह तो विचार से बैठी हुई हैं।

आप के सांसद-विधायक गिरफ्तारी देने रविवार को जाएंगे भाजपा मुख्यालय : केजरीवाल
आप के संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को एक वीडियो संदेश के जरिए आरोप लगाया कि भाजपा जेल-जेल खेल रही है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के सभी सांसद और विधायक रविवार को गिरफ्तारी देने के लिए भाजपा मुख्यालय जाएंगे। केजरीवाल ने कहा कि हमारे नेताओं को जेल में डाला जा रहा है। उन्हें, मनीष सिसोदिया, सत्येन्द्र जैन, संजय सिंह और आज उनके पीए को गिरफ्तार किया गया। आगे राघव चड्ढा, आतिशी, सौरभ भारद्वाज को गिरफ्तार करेंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि पार्टी नेताओं को दिल्ली में बिजली, पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए गिरफ्तार किया जा रहा है।

और उन्हें अपनी पार्टी में मिला लेती हैं। आतिशी ने बताया कि दिल्ली महिला आयोग में रहने के दौरान एंटी करप्शन टीम ने महिला आयोग में हुई नियुक्तियों के खिलाफ स्वाति मालीवाल के नाम पर केस दर्ज किया था। अब इस मामले में सजा का डर दिखाकर स्वाति मालीवाल को इस षड्यंत्र का हिस्सा बनाया गया है।

विश्वभर में लोगों के जीवन काल में हो रही है वृद्धि

-ब्यूरो। नई दिल्ली
'द लैंसेट' पत्रिका में प्रकाशित एक वैश्विक अध्ययन में दावा किया गया है कि भारत में 2050 तक पुरुषों का औसत जीवनकाल 75 वर्ष और महिलाओं का 80 वर्ष होने की संभावना है। विश्वभर में पुरुषों की जीवन प्रत्याशा में करीब पांच वर्ष और महिलाओं की जीवन प्रत्याशा में चार वर्ष से अधिक का सुधार होने का अनुमान है। इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कहा है कि उन देशों में सुधार सबसे अधिक होने की उम्मीद है, जहां जीवन प्रत्याशा कम है। इससे सभी भौगोलिक क्षेत्रों में जीवन प्रत्याशा में समग्र वृद्धि देखने को मिलेगी। शोधकर्ताओं के मुताबिक, हृदय रोगों, कोविड-19, जच्चा- बच्चा व पोषण संबंधी बीमारियों और अन्य संक्रामक रोगों से बचाव को लेकर सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय लोगों के जीवित रहने की दर में सुधार करने वाले कारक हैं। इनसे बढ़े पैमाने पर विश्व स्तर पर जीवन प्रत्याशा में वृद्धि दिखने को मिलेगी। शोधकर्ताओं ने कहा कि दुनियाभर में स्वस्थ जीवन प्रत्याशा आने वाले वर्षों में 2.6 साल बढ़ जाएगी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2022 में जीवन प्रत्याशा का आंकड़ा जहां 64.8 वर्ष था, वहीं 2050 में यह बढ़कर 67.4 वर्ष हो जाएगा। अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि भारत में 2050 तक पुरुषों की जीवन प्रत्याशा औसतन 75



भारत में 2050 तक पुरुषों का औसत जीवनकाल 75 वर्ष, महिलाओं का 80 वर्ष होने की संभावना है

वर्ष से अधिक और महिलाओं के लिए यह लगभग 80 वर्ष हो सकती है। हालांकि, भारत में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए 'स्वस्थ जीवन प्रत्याशा' 65 वर्ष से अधिक होने का अनुमान लगाया गया है। इस अध्ययन में शामिल अमेरिका के वाशिंगटन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन के निदेशक क्रिस मुरे ने कहा, हमने पाया है कि समग्र रूप से जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के साथ ही विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में जीवन प्रत्याशा में असमानता कम हो जाएगी। यह एक सकारात्मक है कि उच्चतम और निम्नतम आय वाले क्षेत्रों के बीच स्वास्थ्य असमानताएं बनी रहेंगी, लेकिन अंतर कम हो रहा है। उप-सहारा अफ्रीका क्षेत्र में जीवन प्रत्याशा को लेकर अधिक सुधार होने की उम्मीद है।

पीएम की सभा में पहुंचे नागरिकता पाए लोग, जताया आभार



एजेंसी। नई दिल्ली
लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पीएम मोदी ने उत्तर पूर्वी दिल्ली के करतार नगर में चुनावी सभा को संबोधित किया। इस सभा में दूसरे देश से भारत आकर बसने वाली महिलाएं भी शामिल हुईं। भारत की नागरिकता मिलने पर इन महिलाओं ने पीएम मोदी का धन्यवाद किया। इन

पीढ़ी तक पीएम मोदी के परिवार रहेंगे। वहीं, पाकिस्तान के सिंध से साल 2011 में भारत आने वाली शायानी नामक महिला ने कहा, हमें पीएम मोदी पर पूरा भरोसा था, जब सभी को नागरिकता दी जा रही है तो हमें भी मिल ही जाएगी। अब मिल गई है। पीएम मोदी ने हमें ठप्पा दे दिया है, हमें नागरिकता मिल गई है। उन्होंने कहा कि कई लोगों को नागरिकता मिल गई है, हमें बहुत खुशी हो रही है। इस दौरान लोगों ने पीएम मोदी के समर्थन में नारे भी लगाए। पीएम मोदी की जनसभा में शामिल इन महिलाओं के हाथों में पोस्टरों और तख्तियां भी देखी गईं। इस तख्तियों पर लिखा नजर आया -- 'जिन्होंने हमें नागरिकता दी, हम उनके साथ हैं', 'मैं हूँ मोदी का परिवार', 'नागरिकता संशोधन अधिनियम के संकल्प को सिद्ध करने के लिए धन्यवाद मोदी जी'। जनसभा के बाद पीएम मोदी ने उन पाकिस्तानी शरणार्थियों से भी मुलाकात की, जिन्हें हाल ही में सीएए के तहत भारतीय नागरिकता दी गई है।

इजरायली सेना ने गाजा में तीन बंधकों के शव किए बरामद

यरुशलम। इजरायली रक्षा बलों (आईडीएफ) और इजरायली सुरक्षा एजेंसी (आईएसए) ने एक संयुक्त अभियान में गाजा पट्टी में तीन इजरायली बंधकों के शव बरामद किए हैं। आईडीएफ के प्रवक्ता डैनियल हगारी ने यह जानकारी दी। समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने हगारी के हवाले से बताया, "पिछले साल 7 अक्टूबर को नोवा रेव पार्टी में हमला के हमले के दौरान तीन इजरायली शनि लौक, अमित युष्किला और इतिव गेलेंटर का अपहरण कर बेरहमी से हत्या कर दी गई, और उनके शवों को गाजा पट्टी ले जाया गया।" आईडीएफ ने शुक्रवार को कहा कि यह अपहरण गाजा पट्टी में गिरफ्तार किए गए हमला आतंकवादियों की जांच और सैन्य खुफिया निदेशालय द्वारा प्रदान किए गए खुफिया जानकारी पर आधारित था।

सी-विजिल एप से 4.24 लाख शिकायतें मिलीं 99.9 प्रतिशत निस्तारित : आयोग

एजेंसी। नई दिल्ली
चुनाव आयोग ने शनिवार को कहा कि आम चुनाव 2024 का घोषणा के बाद से सी-विजिल एप के माध्यम से अब तक 4.24 लाख से अधिक शिकायतें प्राप्त हुईं और इनमें से 99.9 प्रतिशत मामलों का तेजी से समाधान किया गया। चुनाव आयोग ने एक विज्ञप्ति में कहा कि आम चुनाव की घोषणा के बाद से 15 मई तक इस एप के माध्यम से 4.24 लाख से अधिक शिकायतें प्राप्त हुई हैं। इनमें से 4,23,908 शिकायतों का निपटारा किया जा चुका है और शेष 409 मामले प्रक्रियाधीन हैं। लगभग 89 प्रतिशत शिकायतों का समाधान 100 मिनट की समयसीमा के भीतर किया गया। आयोग ने कहा कि लोकसभा चुनाव में चुनाव आयोग का सी-विजिल एप लोगों के हाथों



में चुनाव संहिता के उल्लंघन को चिह्नित करने के लिए एक अत्यधिक प्रभावी उपकरण के रूप में उभरा है। इसमें लाउडस्पीकों का अनधिकृत उपयोग, निषिद्ध अवधि के दौरान प्रचार करना, बैनर और पोस्टरों का अवैध प्लेसमेंट, वाहनों का दुरुपयोग, संपत्ति विध्वंस, आनेवासरों का प्रदर्शन, शराब और नकदी, मुफ्त चीजों को प्रलोभनों का वितरण शामिल है। आयोग ने श्रेणीवार शिकायतों के आंकड़े जारी करते हुए बताया

नासा

बोइंग स्टारलाइनर के मानव मिशन में फिर देरी

25 मई को उड़ान भरने की संभावना

एजेंसी। नई दिल्ली
नासा ने शनिवार को कहा कि केस्पूल थ्रस्टर्स में से एक में हीलियम का रिसाव पाए जाने के चलते बोइंग स्टारलाइनर के ऐतिहासिक मानवयुक्त मिशन में एक बार फिर देरी हो गई है। इस मिशन में चालक दल के अंतरिक्ष यात्री बुच क्लिमेंट और भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स शामिल हैं। मिशन के अब 25 मई को उड़ान भरने की उम्मीद है। नासा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, नासा, बोइंग स्पेस और यूनाइटेड लॉन्च अलायंस (यूएलए) अब एजेंसी के बोइंग क्रू फ्लाइट टेस्ट मिशन के लॉन्च के लिए 25 मई को दोपहर बाद 3:09 बजे का



लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। इसमें कहा गया है, टीम स्टारलाइनर सर्विस मॉड्यूल पर स्थिर हीलियम रिसाव को रोकने के लिए अगले उपायों को अंतिम रूप देने के लिए अंतिमक समय का उपयोग करेंगी। पिछले लंबे समय से

कई बार देरी का सामना करने के बाद, स्टारलाइनर के पहले क्रू मिशन की योजना 7 मई को बनाई गई थी। हालांकि, यूनाइटेड लॉन्च एलायंस के एटलस वी रॉकेट के ऊपरी चरण पर वाल्व की समस्या का चलते लॉन्च से दो घंटे पहले इसे

रद्द कर दिया गया। नासा के अधिकारियों ने 15 मई को स्टारलाइनर के हीलियम सिस्टम पर दबाव परीक्षण किया, जिससे पता चला कि फ्लैट में रिसाव स्थिर है और उड़ान के दौरान उस स्तर पर कोई खतरा पैदा नहीं होगा।

न्यूज बॉक्स

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने परिवार के साथ किए रामलला के दर्शन



अयोध्या। दो दिवसीय दौरे पर अयोध्या पहुंचे पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शनिवार को अपने परिवार के साथ रामलला के दर्शन किए। इस दौरान पूर्व राष्ट्रपति मंदिर परिसर में करीब डेढ़ घंटे तक रहे। उन्होंने राम मंदिर निर्माण सहित पूरे परिसर को देखा। इस दो दिवसीय यात्रा में करीब 80 लोगों को समूह उनके साथ है। उनकी अगुवानी के लिए श्रीराम जनभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय पहले से मंदिर परिसर में थे। पूर्व राष्ट्रपति रामलला के दर्शन-पूजन के बाद कुबेर टीला भी गये और पक्षिराज जटायु की विशाल प्रतिमा के समक्ष श्रद्धापूर्वक नतमस्तक हुए। पूर्व राष्ट्रपति कोविंद शुक्रवार दोपहर बाद ही परिवारजनों के साथ रामनगरी पहुंच गए थे। पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वह वंदे भारत ट्रेन से परिवार समेत अयोध्या पहुंचे। अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन से सभी जैन मंदिर पहुंचे। इसके बाद पूरे परिवार के साथ पूर्व राष्ट्रपति मां सरयू के तट पर दर्शन-पूजन के लिए पहुंचे। उन्होंने सरयू की आरती उतारी। फिर हनुमान जी के दरबार पहुंचकर दर्शन किये।

बिहार के खगड़िया में रील बनाने के चक्कर में छह डूबे, चार लापता

पटना। बिहार के खगड़िया में शनिवार को रील बनाने के चक्कर में छह युवक-युवतियां डूब गए, जिसमें चार अभी तक लापता हैं। बाल-बाल बचे एक युवक और एक युवती को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना अगुवानी गंगा घाट की है। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची एनडीआरएफ की टीम गंगा में डूबे चारों लड़कों को तलाश कर रही है। पुलिस के मुताबिक कुछ लड़के-लड़कियां अगुवानी घाट पर रील बनाने के लिए पहुंचे थे। इसी दौरान पांच युवक और एक युवती गंगा में डूब गए। एक युवक और एक युवती तो किसी तरह से जान बचाकर गंगा से बाहर चले आए लेकिन चार लड़के गंगा के गहरे पानी में चले गए। लापता लड़कों में मुकेश चौधरी, राजन कुमार, आदित्य कुमार और श्याम कुमार हैं। मौके पर परबता के सीओ और थानाध्यक्ष कैप कर रहे हैं। घटना के बाद लड़कों के परिजनों में कोहराम मच गया है।

हरियाणा में टूरिस्ट बस में लगी आग आठ की मौत, कई घायल

नूंह (हरियाणा)। हरियाणा के नूंह में बीती रात एक टूरिस्ट बस में आग लग जाने से उसमें सवार आठ लोगों की जिंदा जलकर मौत हो गई। इसके अलावा कई घायल बताये जा रहे हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, बस में करीब 60 लोग सवार थे। वीडियो में सड़क पर खड़ी बस पूरी तरह आग की चपेट में दिख रही है। घटना के बाद आसपास लोगों की भीड़ जमा हो गई। बस में आग लगने के कारण के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। अब तक आठ लोगों के मरने की पुष्टि हो चुकी है जबकि 20 से ज्यादा लोग घायल बताये जा रहे हैं।

अफगानिस्तान में बारिश, तूफान और बाढ़ से 50 लोगों की मौत

फिरोज कोह (अफगानिस्तान)। पश्चिम अफगानिस्तान के घोर (गोर) प्रांत में बीते 24 घंटों में कम से कम 50 लोगों के मौत की खबर है, जबकि 10 अन्य लापता हैं। एक स्थानीय अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। प्रांतीय पुलिस प्रवक्ता अब्दुलरहमान बदरस ने कहा, "बाढ़ ने प्रांत के शहरक, दुलिया, लाल और सरजंगल जिलों को अपनी चपेट में ले लिया, जिसमें 2,000 आवासघर और 2,500 दुकानें तबाह हो गईं।" समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, घोर के गवर्नर अब्दुल वाहिद हमस के प्रवक्ता ने कहा कि 10 मई को प्रांत और अफगानिस्तान के अन्य क्षेत्रों में अचानक आई बाढ़ के दौरान घोर में सात अन्य लोगों की मौत हो गई। भारी बारिश और बाढ़ ने घोर के पड़ोसी प्रांतों हेरात और फराह की सड़कों भी अवरुद्ध कर दीं। अफगानिस्तान में पिछले महीने से भारी बारिश हो रही है और बाढ़ के लगातार हालात बने हुए हैं, जिसमें जान-माल की क्षति हुई है।

एक नजर

छत की सीढ़ी से गिरकर युवक गंभीर रूप से घायल हुसैनाबाद। रविदास नगर में रंजीत कुमार का 26 वर्षीय पुत्र मुकेश कुमार छत की सिढ़ी से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजनों ने बेहोशी की हालत में इलाज के लिए हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां प्रारंभिक इलाज के बाद स्थिति को गंभीर देखते हुए बेहतर इलाज के लिए मेदिनीनगर रेफर कर दिया।

बुमतेल गांव की युवती ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

चैनपुर : चैनपुर अनुमंडल के जारी थाना क्षेत्र के बुमतेल गांव निवासी प्रमिला कुमारी पिता महेन्द्र मुण्डा उम्र 20 वर्ष ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली घटना के संबंध में ग्राम जानकारी के अनुसार मृतिका प्रमिला कुमारी पिछले एक महीने से मानसिक रूप से बीमार चल रही थी। शुक्रवार की रात हमलोग सभी परिवार खाना खाकर सोने चले। जब सुबह वह अपने कमरे में नहीं दिखी तो काफी खोजबीन की लेकिन उसका कुछ पता नहीं चल पाया तभी गांव के लोग जब अपने खेतों की ओर जा रहे थे तो देखा की सिकरी नाला रोड के पास आम के पेड़ में रस्सी के सहारे युवती लटक की हुई है। जिसके बाद परिजनों ने शव की पहचान अपने बेटी प्रमिला के रूप में की इधर घटना की जानकारी मिलते ही थाना प्रभारी अपने दल बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर अंत्यपरीक्षण के लिए गुमला भेज दिया और मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

मछली मारने गए व्यक्ति की बांध में डुबने से हुई मौत

चैनपुर। चैनपुर थाना क्षेत्र के टिंटानांग बसाईटेरोली गांव में वन विभाग द्वारा बनाए गए अम्बा बांध में डुबने से गांव के सुदेश रैतिया पिता स्वर्गीय ठोल्हा रैतिया उम्र 55 वर्ष की मौत हो गई घटना सुबह 11.30 बजे की है घटना के संबंध में ग्रामीणों ने बतलाया की रविवार को गांव में सरहुल का पर्व है। सभी ग्रामीण बांध में उतरकर मछली पकड़ रहे थे। वहीं बाहर ही बैठा हुआ था लेकिन फिर अचानक से बांध में उतर गया और डुबने लगा जिसे देख ग्रामीणों ने उसे बाहर निकाला जिसके बाद उसकी मौत हो गई। इधर ग्रामीणों ने इसकी सूचना चैनपुर पुलिस को दी जिसके बाद चैनपुर पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर अंत्यपरीक्षण के लिए गुमला भेज दिया।

पंचायत में करोड़ों की लागत से बन रही जलापूर्ति योजना फेल पाटन।

मई के महीना मे भीष्म गर्मी से साथ लू का प्रकोप जारी है। पानी को लेकर ग्रामीण क्षेत्र मे कोहराम मचा हुआ है। जल ही जीवन है। जल के बिना सब अधूरा है। इसकार के द्वारा लगाई गई जन उपयोगी योजना पाटन प्रखंड के किशुनपुर स्थित मयूं टाड पर निर्माधीन ग्रामीण जलापूर्ति योजना फेल के अवस्था में पड़ा हुआ है। इस योजना से पानी टंकी का निर्माण जल स्वच्छता प्रमंडल मेक्नी नगर के तहत कराया गया था। इस पानी टंकी का निर्माण मे कराया गया था।

डीसी ने डिस्पैच सेंटर का किया निरीक्षण, दिए दिशा निर्देश

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। लातेहार डीसी सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी गरिमा सिंह ने भारत माता भवन परिसर में बनाये गये डिस्पैच सेंटर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने डिस्पैच सेंटर की विधि व्यवस्था का जायजा लिया। साथ ही चुनाव संबंधित सामग्री, ईवीएम, बज्रगृह, सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से सीसीटीवी कैमरे, बैरिकेटिंग व अग्निशमन यंत्र आदि की जानकारी ली। इसके बाद डीसी ने बूथवार मार्किंग, बिजली, सुरक्षा व्यवस्था, बैरिकेटिंग, पार्किंग, सीटिंग अरेंजमेंट, साफ-सफाई आदि का जायजा लिया। उन्होंने पोलिंग पार्टी, सेक्टर मजिस्ट्रेट और पुलिस ऑफिसर के बैठने समेत मेडिकल टीम के लिए चिह्नित स्थल का निरीक्षण किया। उपायुक्त ने डिस्पैच सेंटर में सभी आवश्यक सुविधाओं के अलावा सफाई, पेयजल, शौचालय, बिजली आदि को लेकर संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिये।

मौके पर ये लोग थे मौजूद

निरीक्षण के दौरान आईटीडीए निदेशक प्रवीण कुमार गगराई, उप विकास आयुक्त सुरजीत कुमार सिंह, अपर समाहर्ता रामा रविदास, निदेशक डीआरडीए प्रभात रंजन चौधरी, अनुमंडल पदाधिकारी लातेहार कोशल कुमार, भू अर्जन पदाधिकारी राजेश कुमार, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अलका हेंब्रम, कार्मिक कोषांग के प्रभारी पदाधिकारी उदय कुमार, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी डॉ चंदन, गोपनीय शाखा के विशेष कार्य पदाधिकारी श्रेयांग, अंचल अधिकारी अरविंद देवाशीष टोणो सहित कई लोग मौजूद रहे।

एकल अभियान की बैठक में भाजपा को विजयी बनाने का लिया गया संकल्प

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। एकल अभियान, लातेहार अंचल की एक बैठक अंचल अध्यक्ष अभिनंदन प्रसाद की अध्यक्षता में चंदनडीह स्थित कार्यालय में आयोजित की गयी। बैठक में बतौर मुख्य केन्द्रीय अभियान प्रमुख सह राष्ट्रीय महामंत्री ललन शर्मा ने भाग लिया। बैठक को संबोधित करते हुए ललन शर्मा ने कहा कि आगामी 20 मई को तीन लोकसभा क्षेत्रों में मतदान है। इस चुनाव में अधिक से अधिक लोगों को वोट देने के लिए प्रेरित करना हम सभी का लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पहले मतदान फिर जलपान के लिए सभी को, प्रेरित करें। ललन शर्मा ने आगे कहा कि हमें राष्ट्रति में भाजपा प्रत्याशी को विजयी बनाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों को मजबूत करना है।

बैठक में ये लोग रहे मौजूद

बैठक में मौजूद सभी लोगों ने भाजपा को विजयी बनाने का संकल्प लिया। इस दौरान केन्द्रीय व्यास प्रमुख देवकी नंदन दास, हरि कथा योजना के केन्द्रीय आचार्य प्रशिक्षण दिलेश्वर यादव, अंचल उपाध्यक्ष संजय कुमार तिवारी, गंगा प्रसाद, मनमोहन राम संतोष कुमार पासवान, राजधानी यादव, नरेंद्र प्रसाद सिंह, रामहरि प्रसाद, रमेश प्रसाद गुप्ता, रमेश पांडेय, रानी कुमारी, उषा देवी, राजकिशोर यादव, राजनाथ उरांव, बबलू कुमार, अर्जुन सिंह, रविंद्र पांडेय, श्यामलाल यादव, महेंद्र सिंह, राहुल कुमार व आमप्रकाश पासवान आदि मौजूद रहे।

केएन त्रिपाठी ने पैदल रोड शो किया लोगों से विजयी बनाने की अपील की

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। चतरा संसदीय क्षेत्र के इंडी गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी केएन त्रिपाठी ने शुक्रवार की देर शाम लातेहार शहर में पैदल रोड शो किया। रोड शो शहर के पानी टंकी से शुरू होकर मुख्य पथ होते हुए चाणक्यनगरी तक गया। रोड शो के दौरान केएन त्रिपाठी ने लातेहारवासियों से उन्हें विजयी बनाने की अपील की। त्रिपाठी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी व भाजपा संविधान बदलना चाहती है। लेकिन इंडिया गठबंधन ऐसा नहीं होने देगा। उन्होंने कहा कि भाजपा के पास कोई मुद्दा नहीं है, इसलिए वह हिंदुमुसलमान का खेल खेल रही है।

भाजपा पर देश को बांटने आरोप लगाया

मौके पर मौजूद स्थानीय विधायक बैद्यनाथ राम ने भी भाजपा पर देश को बांटने की राजनीति करने का आरोप लगाया। कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी ने देश के जनता को जुमलों के अलावा कुछ नहीं दिया। आज पूरे देश में बरोजगारी व महंगाई चरम पर है। लेकिन केंद्र सरकार को किसी कोई चिंता नहीं है। पिछले दस सालों में मोदी सरकार ने कितनों को नौकरी दी है, यह सब जानते हैं। इस बार केंद्र से भाजपा की इस सरकार का जाना तय है। मौके पर झामुमो जिलाध्यक्ष लाल मोतीनाथ शाहदेव, कांग्रेस जिलाध्यक्ष मुनेश्वर उरांव, राजद जिलाध्यक्ष रामप्रवेश यादव, शमशुल ओहदा, मोहर सिंह यादव, पंकज वितारी, आफताब आलम,अंकित पांडेय, वारिश अंसारी, गोपाल त्रिपाठी, सौरव पाठक, मोनू सिंह, अरूण पाठक, अविनाश रिश्वकर्मा, निरज रजक, राहुल प्रजापति, दीपक कुमार, रंजीत कुमार, बबलू प्रजापति सहित अन्य मौजूद रहे।

बेतला नेशनल पार्क के पास सड़क के किनारे अजगर पाया गया

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू टाइगर रिजर्व के बेतला नेशनल पार्क के अंतर्गत सड़क के नंबर तीन के किनारे पानी के एक झोमें में अजगर सांप पाया गया। इसका पूरा शरीर पानी के अंदर था इसने पानी में किसी चिड़िया को खाने का प्रयास कर रहा था। अजगर को बेतला नेशनल पार्क के एक वनरक्षक निरंजन कुमार ने देखा उन्होंने बताया कि चुके यह अजगर सांप पानी में था और किसी पानी की चिड़िया को खा रहा था। तो उन्होंने इस समय इस सांप को भगाने की कोशिश नहीं की। बल्कि जब वह फिर उसी स्थान पर यानी रोड नंबर 3 या सड़क नंबर तीन पर पहुंचे तो वह सांप उस समय उस पानी के स्रोत में नहीं था। यह अजगर सांप रॉक अजगर कहलाता है रॉक मतलब चट्टान इस लिए लोग इसे रॉक चटनी अजगर कहते हैं जो पहाड़, पथर और चट्टान के बीच में होता है।

इसकी लंबाई लगभग 8 फीट के रही होगी। यह बहुत ही दिलचस्प बात रही के अजगर सांप भी पानी से बेहाल होने के कारण इस पानी के स्रोत में है कि कोई बड़ा सांप गतिमान है। चुके यह अजगर पानी के स्रोत में था शायद इस वजह से उस पानी के स्रोत के पास बंदर या लंगूर नहीं पहुंचे। अजगर सांप पलामू टाइगर रिजर्व में एक अच्छी खासी संख्या में है पलामू टाइगर रिजर्व के अधिकारियों और कर्मियों ने लोगों को सांप के प्रति काफी जागरूक किया है। अब पहले जैसी बात नहीं रही कि सांप देखते ही लोग डंडा, भाला ले कर दौड़ पड़ते हैं। अब लोग बहुत देर तक रहा लेकिन इस पानी के स्रोत से वह फोन निकल जब उसने पानी की चिड़िया के भोजन को समाप्त नहीं कर लिया। यह देखा गया है कि जब भी अजगर सांप किसी भी स्थान से गुजरता है या रहता है तो उस समय पेड़ पौधे पर बैठी चिड़िया, बंदर, लंगूर कुछ ना कुछ ऐसी आवाज पैदा करने लगते हैं जो दूसरे जानवरों को यह संकेत दे जाता

सांप देखने पर पलामू टाइगर रिजर्व के कर्मियों को फोन करते हैं उनसे मदद मांगते हैं और गुहार लगाते हैं कि उनके घर ,दरवाजे, दुकान इत्यादि यदि कोई जहरीला या गेर जहरीला सांप भी है। तो वह उसे अकसर रेस्क्यू करें। पलामू टाइगर रिजर्व की टीम सांपों की तरह की रेस्क्यू पर प्रायः प्रत्येक महीने एक या दो किया करती है।

रेलवे कर्मियों ने मालगाड़ी के ब्रेक में लगी आग पर काबू पाया

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। डालटनगंज रेलवे स्टेशन के अधिकारियों और कर्मियों ने इस भीषण गर्मी की चौथी आग लगी की घटना को सफलतापूर्वक काबू पा लिया। 58 वैगन कोयले से लदी मालगाड़ी के ब्रेक वैन से 32वें वैगन में कोयले में आग लगी देखी गई। डालटनगंज रेलवे स्टेशन के अधिकारियों ने तत्काल इसकी सूचना फायर ब्रिगेड को दिए। फायर ब्रिगेड ने ब्रेक वैन से 32वें नंबर की कोयले की वैगन में लगी आग को बुझाने का काम शुरू कर दिया और 30, 35 मिनट की कड़ी मकसद के बाद इस कोयले से लदी वैगन की आग पर काबू पा लिया गया। यह 58 वैगन की कोयल लदी मालगाड़ी फूल बसिया कोलड साईडिंग से रवाना हुई थी जिसमें 32वें वैगन पर आग की लपटें कोयले से उठ रही थी। आग बुझने के पश्चात इस 58 वैगन वाले कोयले से लदी ट्रेन को डालटनगंज रेलवे स्टेशन के लिए रवाना कर दिया गया। इस आग लगी की घटना फायर ब्रिगेड के द्वारा आग पर काबू पाया इस मालगाड़ी को चोपन के रवाना हो जाने की पुष्टि डालटनगंज रेलवे स्टेशन की अधीक्षक श्री उमेश कुमार ने दी।

कांग्रेस प्रत्याशी ने आखिरी दिन के प्रचार में लगाए जोर

मेदिनीनगर। पलामू जिला कांग्रेस के अध्यक्ष जैस रंजन पाठक उर्फ बिट्टू पाठक ने आज मतदान के प्रचार के आखिरी दिन अपनी सारी ताकत जोक दी। वह चतरा लोकसभा सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार के.एन त्रिपाठी के लिए लोगों से मतदान करते देखे गए। वह उन्होंने मोटरसाइकिल पर बैठकर कई किलोमीटर का फासला तय किया उनके पीछे और उनके साथ कांग्रेसियों की एक भारी संख्या मोटरसाइकिल पर मौजूद थी। वो ग्रामीण क्षेत्र से गुजरी। 18 मई को भारत के चुनाव आयोग के द्वारा शाम से प्रचार प्रसार बंद कर दिया जाता है। चतरा लोकसभा का चुनाव एक सीधी टक्कर के रूप में देखा जा रहा है। यह सीधा टक्कर भाजपा के कालीचरण सिंह और कांग्रेस के के एन त्रिपाठी के बीच है। यह देखता दिलचस्प होगा कि 20 मई को यहां मतदान का प्रतिशत जा रहा। लोकसभा चुनाव अपने चरम सीमा पर है, ही दूसरी ओर गर्मी का भी असर चरम सीमा को छू रहा है।

लोकतंत्र में हर नागरिक को मतदान का अधिकार : विधायक

नवीन मेल संवाददाता

पांकी। पांकी प्रखंड के केकरगढ़ पंचायत के बूथ संख्या 323 के ग्रामीणों के द्वारा कुछ दिन पहले वोट बहिष्कार करने का निर्णय लेने की खबर राष्ट्रीय नवीन मेल अखबार में प्रमुखता से प्रकाशित होने के बाद शनिवार को सुबह पांकी विधायक कुशवाहा डॉक्टर शशिभूषण मेहता गरिहारा गांव पहुंचे। गरिहारा के ग्रामीणों ने बैठक कर लोकसभा चुनाव में वोट नहीं देने का निर्णय लिया था, जिसे सूचना पर पांकी विधायक गरिहारा गांव पहुंच कर ग्रामीणों को मतदान के प्रति प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कहा लोकतंत्र में हर नागरिक को मतदान का अधिकार है। मतदान अवश्य करें। यह आपका मौलिक अधिकार है। विधायक डॉक्टर शशिभूषण मेहता के पहल व पलामू उपायुक्त से सड़क पुल, पुलिया जैसी मूलभूत सुविधाओं के आश्वासन पर मतदान के लिए गरिहारा के ग्रामीणों ने सहमति दी है। उपायुक्त ने रिलेक्रेट किये गये मतदान केन्द्र जोलहबिगहा तक आवागमन हेतु वाहन उपलब्ध कराने की बात कही है। मौके पर प्रो॰ बच्चन ठाकुर, कामेश यादव, विनोद यादव, पप्पू यादव, राजकुमार यादव, अमरिक यादव, शंकर यादव, अमरेश यादव, देवेंश यादव, बालकिशुन उरांव सहित कई लोग उपस्थित थे।

डीसी ने मनातू व पांकी के इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम एवं बूथों का किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। चतरा संसदीय सीट पर चुनाव को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डीसी शशि रंजन ने पांकी विस क्षेत्र अंतर्गत मनातू में बने इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने परिवोजना कार्त्तिक उरांव उच्च विद्यालय व चक के इलाके में उत्क्रमित प्लस टू उच्च विद्यालय में बने इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने दोनों ही आईएसआर से अटैचड बूथ नं। 1, 2, 3, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17 समेत अन्य बूथों का भी जायजा लिया। डीसी रंजन ने उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय, जलेया में बने बूथों पर स्थानीय बीएलओ से एससडी लिस्ट व वोटर इनफॉर्मेशन स्लीप के अतिवतरण सूची की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने शत-प्रतिशत वोटर इनफॉर्मेशन स्लीप को ससमय वितरण किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने गर्मां के मेदनजर पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था व टेंट अनिवार्य रूप से लगाने पर बल दिया।

ग्रामीणों से संवाद कर मतदान के लिए किया प्रेरित

अंतरराज्यीय चेक नाका व पुलिस पिकेट का लिया जायजा

लोकसभा चुनाव को लेकर पांकी विस क्षेत्र अंतर्गत भ्रमण के दौरान आईएसआर व बूथों का निरीक्षण के बाद डीसी शशि रंजन ने चक में बने अंतरराज्यीय चेक नाका व पुलिस पिकेट का जायजा लिया। इस दौरान पिकेट के कुछ जवानों ने डीसी से पंखा लगवाने का अनुरोध किया। इस पर डीसी ने मनातू सीओ को अखिलंब पंखा लगवाने के निर्देश दिये। उन्होंने मनातू सीओ से रिजर्व ईवीएम मशीन को सुरक्षित रखने के लिए बने इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम से विभिन्न मतदान केंद्रों की दूरी एवं सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ली। मनातू के बाद उन्होंने पांकी के ताल उच्च विद्यालय में बने इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम का भी जायजा लिया। मनातू व पांकी में जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने स्थानीय ग्रामीणों से सीधा संवाद स्थापित कर उन्हें आगामी चुनाव में मतदान करने के लिए प्रेरित किया। मौके पर डीडीसी रवि आनंद, संबंधित बीडीओ-सीओ, सेक्टर पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

माओवादी का सक्रिय सदस्य गिरफ्तार, कई राज उगले

नवीन मेल संवाददाता

छतरपुर। प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के 15 लाख के इनामी नीतेश यादव के दस्ते में शामिल नक्सली कामेश्वर यादव उर्फ धनराश यादव उर्फ धनराश यादव को छतरपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उसके घर आने की सूचना पर जिले के पांडू थाना क्षेत्र के खेरा मंगरदाह में छापेमारी कर उसे गिरफ्त में किया है। माओवादी कामेश्वर 23 अगस्त 2023 को महुंदंड से काला पहाड़ के बीच बन रही पक्की सड़क में लगे मुंशी एवं मजदूरों के साथ मारपीट की थी व निर्माण में लगे सात से आठ वाहनों को जला दिया था। यह घटना छतरपुर थाना क्षेत्र की है। छतरपुर एसडीओ नौशाद आलम ने पत्रकारों को बताया कि महुंदंड से काला पहाड़ के बीच सड़क निर्माण में आगजनी, मारपीट में शामिल चार माओवादियों को अबतक गिरफ्तार किया गया है। इससे पहले हरिहर यादव और राकेश्वर यादव उर्फ विनोद यादव को गिरफ्तार किया गया था, जबकि चतरा के प्रतापपुर थाना पुलिस ने दो दिन पहले बबन भोक्ता उर्फ बबन गंडू को गिरफ्तार किया है। बबन की निशानदेही पर कामेश्वर यादव को गिरफ्तार किया गया। एसडीपीओ ने बताया कि आगजनी की घटना को 15 लाख के इनामी माओवादी नीतेश यादव के दस्ते ने अंजाम दिया था और उसमें कामेश्वर यादव भी शामिल था। माओवादी कामेश्वर ने कई महत्वपूर्ण जानकारी दी है, जिसके आधार पर पुलिस कार्रवाई कर रही है। साथ ही घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। उन्होंने कहा कि कामेश्वर यादव शीर्ष माओवादी कमांडर नीतेश यादव का करीबी है।

बीएयू कुलपति डॉ एससी दुबे आईसीएआर की गवर्निंग बॉडी के सदस्य मनोनीत

नवीन मेल संवाददाता

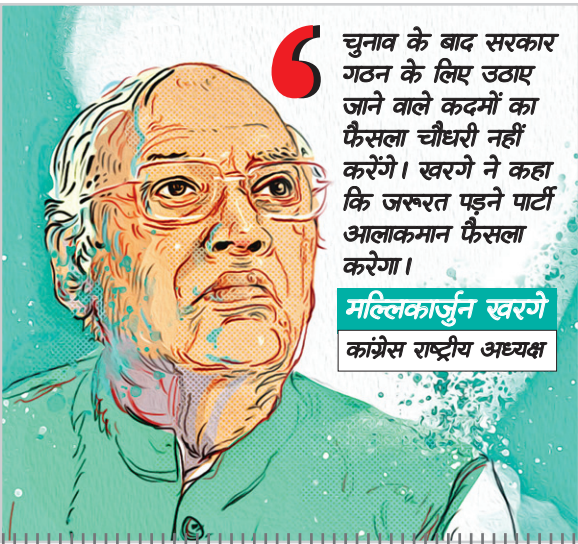
रांची। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के कुलपति डॉ एससी दुबे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) सोसाइटी की आम सभा और शासी निकाय के सदस्य मनोनीत किए गए हैं। केन्द्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री अर्जुन मुंडा आईसीएआर सोसाइटी की आम सभा के अध्यक्ष हैं, जबकि आईसीएआर के महानिदेशक डॉ हिमांशु पाठक समिति के शासी निकाय के प्रमुख हैं। आईसीएआर सोसाइटी में देश के पांच कृषि विश्वविद्यालय के कुलपतियों को भी सदस्य मनोनीत किया जाता है। सोसाइटी की आम सभा की बैठक वर्ष में एक बार, जबकि शासी निकाय की बैठक त्रैमासिक होती है। वर्ष 1929 में स्थापित आईसीएआर कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा में विज्ञान एवं

प्रावैधिकी को प्रोत्साहित करने वाली देश की शीर्ष संस्था है। शिक्षण, अनुसंधान, परियोजना प्रबंधन एवं प्रशासन के क्षेत्र में 35 वर्षों का अनुभव रखने वाले डॉ दुबे ने इस वर्ष जनवरी में बीएयू के कुलपति का पदभार ग्रहण किया था। इसके पूर्व वे आईसीएआर मुख्यालय, नई दिल्ली में सहायक महानिदेशक (पौधा संरक्षण एवं बायोसेप्टी) के पद पर कार्यरत थे।



कांग्रेस आलाकमान के खिलाफ अधीर रंजन का विद्रोही तेवर

एजेंसी
कोलकाता | पश्चिम बंगाल काग्रेस अध्यक्ष और लोकसभा के पांच बार के सदस्य अशीश रंजन चौधरी ने शनिवार को तुणमूल काग्रेस के साथ पार्टी के चुनाव बाद के संबंधों के मुद्दे पर आलाचक्र के खिलाफ विद्रोही तैवर दिखाना। पार्टी के भीतर आंतरिक कलह की जड़ काग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का शनिवार को लखनऊ में मीडियाकर्मियों को दिया गया वह बयान है, जिसमें उन्होंने कहा था कि चुनाव के बाद शनिवार गठन के लिए उठाए जाने वाले कदमों का फैसला चौधरी नहीं



है। उधर, तृणमुल कोरिस नेतृत्व ने
खरगो की टिप्पणी के हवाले से यह
कहना शुरू कर दिया है कि पशिय
बालांल में उनकी पार्टी ही भाजपा का
मुकाबला कर सकती है।

गौरतलब है कि झुझकार को
चौधरी ने चुनाव के बाद संभावितता
इंडिया ब्लांक की संस्कार को बाहर
से सार्थन पदेन पर मुख्यमंत्री की
टिप्पणियों पर दोउर प्रतिक्रिया व्यक्त
की थी। उन्होंने कहा, "मुझे उम
भरोसा नहीं है। वह इंडिया गुट से
अलग है। अब वह हारे साधारण
मिलों के कोशिश कर रही हैं।
क्योंकि उन्हें एहसास है कि हम
राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत हो रहे हैं।

महाराष्ट्र में इंडी आघाड़ी को मिलेंगे 46 सीटें : खरगे

एजेंसी
अन्यथा कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को मुंबई में कहा कि देश की जनता भाजपा की तोड़फोड़ से नाराज है। इसका असर देश में फैल रहे लोकसभा चुनाव में देखने को मिल रहा है।

मल्लिकार्जुन खरगे ने दावा किया कि महापक्ष में डंडी आघाड़ी को 48 में से 46 सीटें मिलने वाली हैं। वह डंडी आघाड़ी को संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोल रहे थे।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) अध्यक्ष शरद पवार, शिवसेना के वरिष्ठ के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे की

मौजूदगी में मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि देश की जनता भाजपा की गतिविधियों, तोड़फोड़ की नीति से नाराज है। इंडी आघाड़ि भाजपा की तोड़फोड़ नीति और अलचार्ज कुप्रबंधन के खिलाफ लड़ा रहा है। खरगे ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने 30 लाख करकरी नौकरियों, महालक्ष्मी योजना के तहत ग्रवि महिलाओं, 25 लाख रुपये प्रति वर्ष देने, 20 लाख रुपये का स्वस्थ बीमा, कृषि पन जीएसटी हटाने, ऋण माफी, जीएसटी के स्थान पर एक ही दर की नया सीधा जीएसटी लागू करके की गारंटी दी है।

तुष्टीकरण के लिए हिंसा फैला सकते हैं मौकापरस्त नेता: पीएम

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस और आम आदमी पार्टी पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन दिल्ली को तबाह करने में जुटा है, ये लोग दिल्ली को लूटने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं। उन्होंने विपक्षी गठबंधन को मौका प्रस्त गठबंधन बताते हुए कहा कि ये मौकाप्रस्त गठबंधन तुष्टीकरण के लिए देश में हिंसा भी फैला सकता है। जब सीएचए कानून आया था, तब इन्होंने दिल्ली को महीनों के लिए बंधक बना दिया था। पहले रास्ते रोके, फिर दंगे करए, लेकिन आज पूरा देश देख रहा है कि इनके झूठ का पदार्पण हो चुका है। दिल्ली में वर्षों से रह चुके शरणार्थियों को भारत की नागरिकता मिल रही है। इनके घोषणापत्र में भी मुस्लिम लोग की छाप नजर आ रही है। कांग्रेस के शहजादे लोगों की संपत्ति छीनकर अपने वोट बैंक को देना चाहते हैं।

पीएम मोदी ने पिछले 10 वर्षों में दिल्ली में किए गए विकास कामों को गिनाते हुए कहा कि एक तरफ भारत सरकार दिल्ली का चौरपाटा विकास कर रही है, दिल्ली के हर गरीब और मध्यम वर्ग के व्यक्ति के जीवन को आसान बनाने का प्रयास कर रही है तो वहीं दूसरी तरफ इंडी गठबंधन दिल्ली को तबाह करने में जुटा है। ये लोग लगातार राजनीति का पतन करने के लिए और करोड़ों देशवासियों का भरोसा तोड़ने के लिए जिम्मेदार हैं।



शिवसेना के संजय राऊत के खिलाफ केस दर्ज

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में आपत्तिजनक बयानबाजी करने पर शिवसेना (यूबीए) के नेता संजय राऊत के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। अहमदनगर जिले के कोतवाली पुलिस स्टेशन में मुकदमा दर्ज होने के बावजूद संजय राऊत की मुसीबतें बढ़ने की जोरदार चर्चा है। महाविक्तास आघाड़ी के उम्मीदवार नीलेश लंके का चुनाव प्रचार करने के लिए 8 मई की शाम को अहमदनगर शहर के क्लाराब्रस मैदान में एक सभा हुई थी। इसी सभा में संजय राऊत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरुद्ध बयानबाजी की थी। इसके बाद चुनाव आयोग ने पुलिस को इस संबंध में मामला दर्ज करने का निर्देश दिया। स्थानीय पुलिस अब इस मामले की गहन छानबीन में जुटी है।

हमारी लड़ाई किसी व्यक्ति के खिलाफ नहीं, भाजपा के खिलाफ : उमर अब्दुल्ला

एजेंसी
श्रीनगर। उत्तरी कश्मीर के बारामूला लोकसभा क्षेत्र से नेशनल कॉन्ग्रेस (एनसी) के उम्मीदवार और जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि उनकी लड़ाई किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि भाजपा के खिलाफ है। क्षेत्र में चुनाव प्रचार करते हुए उमर ने कहा, इस चुनाव में भाजपा के पास कोई उम्मीदवार नहीं है, इसलिए जो कोई भी नेशनल कॉन्ग्रेस और इंडिया ब्लाक के खिलाफ चुनाव लड़ रहा है, वह भाजपा को फायदा पहुंचा रहा है। उन्होंने बताया कि चुनाव में घाटी से इंडिया ब्लाक के तीन आधिकारिक उम्मीदवार हैं। दक्षिण कश्मीर से मियां अल्लाफ अहमद, मध्य कश्मीर से आगा



संभावनाओं को मजबूत करने के लिए बड़गाम, बीरवाह और बांदीपोरा जैसे क्षेत्रों में शियाओं का समर्थन हासिल करने का प्रयास कर रही है।

आर्थिक रूप से पिछड़े कुपवाड़ा में नेशनल कॉन्फ्रेंस के लिए समर्थक ने कहा, उम्मा अब्दुल्ला एक बड़े नेता हैं और अतीत में जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री रह चुके हैं, लोगों को उससे बहुत उम्मीदें हैं, हम चाहते हैं कि वह चुनाव जीतें और इस क्षेत्र के लोगों के लिए काम करें।

मतदान की तारीख निकल आते ही सभी की निगाहें केंद्र शासित प्रदेश के लिए लोकसभा चुनाव परिणामों पर टिकी हैं। ये परिणाम यहां के राजनीतिक भविष्य की दशा व दिशा तय कर सकते हैं।

**पाकिस्तान गलती करेगा तो बुंदेलखंडी
तोप का गोला देगा जवाब : अमित शाह**
बेटे-बेटियों के लिए राजनीति करने वाले कभी देश का भला नहीं कर सकते

एजेंसी
ललितपुर (यूपी)। भाजपा के
वरिष्ठ नेता एवं केंद्रीय गुप्तचर
अभित शाह ने एक चुनावी जनसभा
में कहा कि नरेंद्र मोदी के
प्रधानमंत्री बनने के बाद योगी
आदिनारायण मुखर्जी बने और
उत्तर प्रदेश के विकास की
शुरुआत हुई। एक जमाना था जब
उत्तर प्रदेश में देशी कंबू बने थे
लेकिन मोदी ने बुदिलखंड में
डिपेंस कॉफीडोर बनाया, अब यहाँ
तोप के गोले बने हैं। पाकिस्तान
ने अगर कोई भी गलती की तो ये

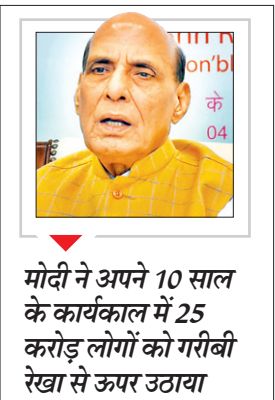


माँ को जिताने की अपील करते हुए शाह ने कहा कि इस भूमि ने मुगलों के सामने भी लड़ाई लड़ी है और अंग्रेजों के सामने भी। अब हमारे देश में मौजूद देशी अंग्रेजों के खिलाफ भी बुंदेलखंड को लड़ाई लड़नी है।
 उन्होंने कहा कि बेटे-बेटियों के लिए राजनीति करने वाले देश का भला नहीं कर सकते।
 केन्द्रीय गृहमंत्री शाह ने झांसी-कलकत्तापुर लोकसभा क्षेत्र में जनसभा में कहा कि एक जमाने में बुंदेलखंड से बाबूबली पुरे देश में

जाते थे। आप तीसरी बार मोदी को प्रधानमंत्री बना दीजिए, हमारा बुदेलखंड यहां से बाहबली की जगह उद्योगपति पूरे देश में भेजने का काम करेगा। ये चुनाव देश के विकास का चुनाव है। ये चुनाव देश को सुरक्षित करने का है। ये चुनाव हमारे धर्म और संस्कृति के रक्षण का चुनाव है। ये चुनाव भारत को महान बनाने का चुनाव है। ये चुनाव देश के गरीबों का कल्याण करने का चुनाव है और ये चुनाव बुदेलखंड की प्यास बुझाने का चुनाव है।

कुछ दिनों में कांग्रेस विलुप्त व सपा हो जायेगी समाप्त पार्टी: राजनाथ सिंह

एजेसी
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता एवं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कांग्रेस और सपा पर निशाना साधते हुए कहा कि कुछ दिनों बाद कांग्रेस विलुप्त और सपा समाप्त पाई हो जायेगी। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में अब जल्द ही राम राज्य स्थापित होगा। उन्होंने यह बातें शनिवार को बस्ती लोकसभा क्षेत्र के हरेयाँ विधानसभा में कंपोजिट विद्यालय जूनियर हाई स्कूल परिसर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि भारत



सालों तक कांग्रेस ने अपनी सरकार चलाई, उस दौरान उन्होंने गरीबी को बहाल की को लेकिन गरीबी का उन्मूलन नहीं किया।

रक्षा मंत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 10 साल के कार्यकाल में 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया है, जबकि कांग्रेस के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी केजरे थे कि मैं दिल्ली से सी रूप्या बेजते थे जो जनात का सिर्फ 15 रूपय ही पहुंचता है। ऐसे में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अपने कार्यकाल में उन्होंने रूपय सी बेजे तो रूपय सी ही जनात को मिले।

लोकसभा चुनाव 2024

8 राज्यों की 5

एजेंसी
नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के छठे चरण में दिल्ली, हरियाणा सहित आठ राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की 58 सीटों पर 25 मई को मतदान होगा। इस चरण में 889 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इसमें एक अनंतनाग-राजौरी सीट भी है, जहाँ तीसरे चरण के स्थान पर छठे चरण में मतदान होगा। चुनाव आयोग के मुताबिक दिल्ली, हरियाणा, बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड समेत सात राज्यों



की 57 लोकसभा सीटों के लिए 1978 नामांकन प्राप्त हुए थे। छठे चरण में उत्तर प्रदेश की 14 सीटों के लिए सबसे अधिक 470 नामांकन प्राप्त हुए हैं। इसके बाद हरियाणा की 10 सीटों के लिए

चरण में 25 को

सीटों पर



370 नामांकन किए गए हैं। रांची लोकसभा सीटों के लिए 70 और नॉर्थ ईस्ट दिल्ली सीट के लिए 69 नामांकन प्राप्त हुए थे। इस चरण में औसतन 15 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। राज्यवार आंकड़ों की

गा मतदान, मतगणना 4 जून को

889 उम्मीदवार

छोटे चरण में 900 न

जम्मू-कश्मीर की अनंतनाग-राजौरी सीट पर मतदान छठे चरण में 25 मई को है। छठे चरण के लिए 6 मई नामांकन की अंतिम तारीख थी। सभी नामांकन की जांच के बाद 900 नामांकन वैध पाए गए। अनंतनाग सीट पर 28 नामांकन किए गए थे, जिसमें से 21 वैध पाए गए।

बात करें तो बिहार की 8 सीटों के लिए 86, हरियाणा की 10 के लिए 223, जम्मू-कश्मीर की एक के लिए 20, झारखंड की चार सीटों के लिए 93, दिल्ली की 7 सीटों के लिए 162, ओडिशा की 6 सीटों

के लिए 64, उत्तर प्रदेश की 14 सीटों के लिए 162 और पश्चिम बंगाल की 8 सीटों के लिए 69 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इसके बाद सातवें चरण की वोटिंग 1 जून व मतगणना 4 जून को है।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap

Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

"Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए

50% की छूट

Facilities

- ❖ आरसीटी
- ❖ पायरिया का ईलाज
- ❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
- ❖ स्माईल डिजाइन
- ❖ इनविजिवल क्लिप

- ❖ दंत रोपण
- ❖ फिक्स दाँत लगाना
- ❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER

SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi

Contact No. : 9199533383, 7903835453

Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm

Sunday : 9 am to 2 pm

E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com